

हरिभूमि रेवाड़ी भूमि

रोहतक, रविवार, 10 अगस्त 2025

तापमान



अधिकतम 28.5 डिग्री
न्यूनतम 21.0 डिग्री

12 एसजीएफआई की
जिला स्तरीय शूटिंग
स्पर्धा का समापन,
18 खिलाड़ी स्टेट के
लिए चयनित



12 सावन के अंतिम
दिन इमामझम बारिश
पारा गिरने से भारी
गर्मी से राहत



खबर संक्षेप



रेवाड़ी। रैली को रवाना करते हुए कांता देवी।
फोटो: हरिभूमि

विद्यार्थियों ने तिरंगा रैली से दिया एकता का संदेश

रेवाड़ी। राजकीय माध्यमिक विद्यालय सुंदरोज के विद्यार्थियों ने स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य में तिरंगा रैली का आयोजन किया। मौलिक मुख्य अध्यापिका कांता देवी ने रैली हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। कार्यक्रम प्रभारी विज्ञान अध्यापक महेश कुमार ने रैली का नेतृत्व किया। रैली में विद्यार्थियों व स्कूल स्टाफ ने तिरंगे हाथ में लेकर भारत माता की जय तथा बंदे मातरम के नारे लगाए। रैली के माध्यम से देश की एकता व अखंडता का संदेश दिया गया। मुख्य अध्यापिका ने कहा कि आजादी के पर्व को सभी को हर्षोल्लास से मनाना चाहिए। इस अवसर पर अध्यापक सुरेश कुमार, पवन सिंह व अजीत सिंह सहित सभी विद्यार्थी उपस्थित थे।

दहेज उत्पीड़न मामले में एक गिरफ्तार

रेवाड़ी। महिला थाना पुलिस ने दहेज के लिए महिला को प्रताड़ित करने और जान से मारने की धमकी देने के मामले में एक आरोपी को गिरफ्तार किया है। गत वर्ष जिले के एक गांव निवासी महिला ने ससुराल पक्ष के लोगों पर दहेज प्रताड़ना के आरोप लगाते हुए महिला थाने में शिकायत दर्ज कराई थी। दोनों पक्षों के बीच समझौता नहीं होने के बाद पुलिस ने 23 अगस्त को केस दर्ज किया था। इस मामले में पुलिस ने राजस्थान के बापोली निवासी दिनेश को गिरफ्तार किया है।

सड़क हादसे का आरोपी चालक गिरफ्तार

रेवाड़ी। रामपुरा थाना पुलिस ने मार्च माह में हुए सड़क हादसे के बाद मौके से फरार हुए एक वाहन चालक को गिरफ्तार किया है। हरिनगर के पास 25 मार्च को हुए हादसे के बाद वाहन चालक मौके से फरार हो गया था। हादसे में एक बाइक सवार युवक की मौके पर ही मौत हो गई थी। इस मामले में पुलिस ने वाहन चालक बिहार के दहिला पतसावन निवासी अजीत सिंह को गिरफ्तार कर लिया। तपतीश में शामिल करने के बाद आरोपी को पुलिस बेल पर रिहा कर दिया गया।

धोखाधड़ी मामले में एक आरोपी गिरफ्तार

रेवाड़ी। कसोला पुलिस ने गत वर्ष दर्ज किए गए धोखाधड़ी के मामले में एक आरोपी को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने पीड़ित पक्ष की शिकायत के आधार पर 23 सितंबर 2024 को तीन आरोपियों के खिलाफ धोखाधड़ी का केस दर्ज किया था। पुलिस ने केस दर्ज करने के बाद मामले की जांच शुरू की थी। जांच के बाद पुलिस ने इस मामले में गुरुग्राम निवासी विजय को गिरफ्तार किया है। दो आरोपियों को पुलिस पहले ही गिरफ्तार कर चुकी है। आरोपी को जांच में शामिल करने के बाद रिहा कर दिया गया।

मारपीट व धमकी का आरोपी गिरफ्तार

रेवाड़ी। रामपुरा थाना पुलिस ने कालूवास गांव में मारपीट करने और जान से मारने की धमकी देने के मामले में एक आरोपी को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने अस्पताल में उपचाराधीन घायल के बयान पर गत 4 अगस्त को विभिन्न धाराओं के तहत केस दर्ज किया था। उसने मारपीट करने और जान से मारने की धमकी देने के आरोप लगाए थे। जांच के बाद पुलिस ने कालूवास निवासी यशपाल को इस मामले में गिरफ्तार किया है। बाद में उसे पुलिस बेल पर छोड़ दिया गया।

- दिन में ठीक नजर आई व्यवस्था
- रक्षाबंधन पर रोडवेज की फ्री यात्रा इस बार महिलाओं के लिए आफत साबित हुई

हरिभूमि न्यूज ॥ रेवाड़ी

जिले में रक्षाबंधन का त्योहार हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। शनिवार सुबह से ही लगातार चल रही रिमझिम बरसात के बीच बस स्टैंड पर शाम तक महिलाओं का आवागमन चलता रहा। रक्षाबंधन पर जहां दिन में ट्रैफिक व्यवस्था ठीक रही, वहीं शाम से देर रात्रि तक सरकुलर रोड सहित अन्य मार्गों पर कूटी। हालांकि शुकुवार की अपेक्षा शनिवार को बस स्टैंड पर ज्यादा भीड़ नहीं रही। रक्षाबंधन के त्योहार पर कई प्राइवेट बस संचालकों ने सवारियों से दोगुना तक किराया भी वसूला।



रेवाड़ी। बस स्टैंड से सवारियां भरकर जाते हैं प्राइवेट बस, बस स्टैंड पर अपने रूट की बस के इंतजार में यात्री, बस स्टैंड पर रोडवेज बस का इंतजार करती महिलाएं।

सवारियां भरकर रवाना हुईं। इस बार एसटीए परमिट की बसों ने महिलाओं व बच्चों से किराया वसूलने के कारण जमकर चांदी कूटी। हालांकि शुकुवार की अपेक्षा शनिवार को बस स्टैंड पर ज्यादा भीड़ नहीं रही। रक्षाबंधन के त्योहार पर कई प्राइवेट बस संचालकों ने सवारियों से दोगुना तक किराया भी वसूला।

लंबे रूटों पर चलाई गई ज्यादा बसें

शनिवार को रोडवेज डिपो की ओर से चंडीगढ़, जयपुर व जालंधर जैसे लंबे रूट की बसों को दिन में भीड़भाड़ वाले लोकल रूट पर चलाया गया ताकि महिलाओं को परेशानी हो और शाम को लंबे रूटों के लिए इन बसों रवाना किया गया। बस स्टैंड पर नारनौल, महेन्द्रगढ़, कोटकासिम, दिल्ली, पटौदी, सोहना, कोसली व अलवर के बूथ पर ज्यादा भीड़ रही। रोडवेज डिपो की करीब 160 बसें मध्यरात्रि तक अपने रूटों पर दौड़ती रही। लोकल रूटों के बसों ने अधिक फेरे लगाए। रोडवेज स्टाफ महिलाओं को बसों



रेवाड़ी। बस स्टैंड से सवारियां भरकर जाते हैं प्राइवेट बस, बस स्टैंड पर अपने रूट की बस के इंतजार में यात्री, बस स्टैंड पर रोडवेज बस का इंतजार करती महिलाएं।



रेवाड़ी। बस स्टैंड के बाहर बनी जाम की स्थिति। फोटो: हरिभूमि में प्री सुविधा देने के इंतजार में देर लगा रहा। इसके अलावा बस



रेवाड़ी। बस स्टैंड से सवारियां भरकर जाते हैं प्राइवेट बस, बस स्टैंड पर अपने रूट की बस के इंतजार में यात्री, बस स्टैंड पर रोडवेज बस का इंतजार करती महिलाएं।

मिष्ठान मंडारों व राखी की स्टॉलों पर रही भीड़। रक्षाबंधन पर बाजार में राखी की स्टॉलों पर महिलाओं व युवतियों की काफी भीड़ रही। बहनें अपने भाईयों की कलाई पर बांधने के सुंदर राखी पसंद करती नजर आईं। शहर के पंजाबी मार्केट, मोती चौक, गोकल बाजार, पेठा बाजार व बीएफजी मॉल में महिलाओं की काफी भीड़ रही। इसके अलावा शहर के मिष्ठान मंडारों पर भी लोग मिठाई खरीदते नजर आए।

स्टैंड पुलिस चौकी का पूरा स्टाफ सुरक्षा के लिए तैनात रहा। शहर के सरकुलर रोड व अन्य मार्गों पर अतिक्रमण के कारण व यातायात व्यवस्था बिगड़ने से वाहन जाम में वाहन फंसे रहे। जाम के कारण सरकुलर रोड स्थित अग्रसेन चौक, नाईवाली चौक, अंबेडकर चौक, बावल चौक व धारूहेड़ा चुंगी पर वाहन चालकों को काफी इंतजार करना पड़ा। शनिवार को शाम होते ही लोगों के वापस लौटने पर जाम की स्थिति ज्यादा रही। प्री यात्रा के दौरान दिल्ली, नारनौल, महेन्द्रगढ़, कोटकासिम, पटौदी व सोहना के रूटों पर ज्यादा भीड़ रहती है। इन रूटों पर अधिकारियों की ओर से विशेष ध्यान दिया गया।

नेहरूगढ़ में रक्षाबंधन पर वार्षिक मेले जागरण व कुश्ती दंगल का हुआ आयोजन

■ कुश्ती दंगल में क्षेत्र के नामी-गिरामी पहलवानों ने शानदार प्रदर्शन करके दर्शकों को रोमांचित किया

हरिभूमि न्यूज ॥ कोसली

नेहरूगढ़ स्थित बाबा काला मुंह वाले मंदिर में रक्षाबंधन के पावन अवसर पर वार्षिक मेले, जागरण, कुश्ती दंगल व भंडारे का आयोजन किया गया। जागरण में मशहूर रागनी गायक वीरपाल खरकिया एंड पार्टी अपने भजनों से बाबा की महिमा का गुणगान किया। शनिवार प्रातः हवन



रेवाड़ी। कुश्ती दंगल में पहलवानों का परिचय करते अतिथि व ग्रामीण। फोटो: हरिभूमि

व भंडारे का आयोजन किया गया, जिसमें सैकड़ों श्रद्धालुओं ने प्रसाद ग्रहण किया। दोपहर में आयोजित कुश्ती दंगल में क्षेत्र के नामी-गिरामी पहलवानों ने शानदार प्रदर्शन करके दर्शकों को रोमांचित किया। इस मौके पर मुख्य अतिथि विजय गुडियानी ने पहलवानों का हौसला

बढ़ाते हुए कहा कि खेल तन और मन को मजबूत बनाते हैं, साथ ही एक सशक्त राष्ट्र के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। खेल नशा मुक्त समाज की ओर एक मजबूत कदम है और युवाओं में अनुशासन, परिश्रम व आगे बढ़ने की भावना का विकास करते हैं। हरियाणा ने कुश्ती में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी श्रेष्ठता सिद्ध की है। मौके पर सरपंच आशीष प्रजापति, मंदिर कमेटी से सोनू राजपूत, जिले सिंह, महासिंह, सतीश, हवासिंह, कंवर सिंह व नरपाल सहित अन्य सदस्य मौजूद रहे।

स्कूटी चोरी करने के मामले में एक और आरोपी गिरफ्तार

■ पुलिस इस मामले में दो आरोपियों को पहले ही गिरफ्तार कर चुकी

हरिभूमि न्यूज ॥ रेवाड़ी

भाड़ावास गेट चौकी पुलिस ने स्कूटी चोरी करने के मामले में एक और आरोपी को गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार किए गए आरोपी की पहचान गुजरात के भाव नगर कोडीनार हाल आबाद मोहल्ला नई आबादी निवासी राकेश उर्फ राकला के रूप में हुई है। पुलिस इस मामले में दो आरोपियों को पहले ही गिरफ्तार कर चुकी है।



रेवाड़ी। पुलिस गिरफ्तार में स्कूटी चोरी का आरोपी। फोटो: हरिभूमि

मोहल्ला बास सिताबराय निवासी प्रवीण सैन ने गत 9 मई की रात को अपनी स्कूटी घर के बाहर खड़ी की थी, जिसे कोई व्यक्ति चोरी करके ले गए। पुलिस ने मामले में संलिप्त दो आरोपी रवि उर्फ मोदी व रोहित उर्फ गोलू को पहले ही गिरफ्तार कर लिया था। पुलिस ने आरोपियों के कब्जे से चोरी की गई स्कूटी को भी बरामद कर लिया था। पुलिस ने शुकुवार को मामले में संलिप्त एक और आरोपी राकेश उर्फ राकला को भी गिरफ्तार कर लिया है। पुलिस ने आरोपी को अदालत में पेश करके न्यायिक हिरासत में भेज दिया है।

दड़ौली में बाबा जाहरवीर का मेला 17 और 18 को

रेवाड़ी। गांव दड़ौली में ग्राम पंचायत और सभी ग्रामीणों की ओर से 17 और 18 अगस्त को बाबा जाहरवीर का मेला और कुश्ती दंगल आयोजित किया जाएगा। मेला कमेटी के प्रधान बलबीर सिंह शास्त्री ने बताया कि मेले में कबड्डी और कुश्ती दंगल का आयोजन होगा। नेशनल कबड्डी की विजेता टीम को 41 हजार, उप विजेता टीम को 31 हजार, जबकि तृतीय और चतुर्थ स्थान प्राप्त करने वाली टीमों को क्रमशः 5100 और 2100 रुपये का इनाम स्वामी समर्पणानंद की अध्यक्षता में दिया जाएगा। उन्होंने बताया कि छोटी कुश्ती सौ रुपए से 500 रुपए इनाम के लिए, जबकि बड़ी कुश्तियां 1100 रुपए, 2100, 3100, 5100, 11000, 21000, 31000, 51000 और 1 लाख रुपये के इनाम राशि वाली होगी। 17 अगस्त को कबड्डी प्रतियोगिता में मुख्य अतिथि एसपी हेमंत कुमार मीणा व विशिष्ट अतिथि अनिल कुमार यादव एसपी राज्य सतकर्ता ब्यूरो फरीदाबाद होंगे। 18 अगस्त को कुश्ती दंगल के मुख्य अतिथि कोसली विधायक अनिल यादव, जबकि विशिष्ट अतिथि करणपाल यादव चेयरमैन होंगे।

प्राचीन जोहड़ में डाला जा रहा गांव का दूषित पानी ग्रामीणों को जानलेवा बीमारियां होने का खतरा

हरिभूमि न्यूज ॥ रेवाड़ी

आदर्श गांव मीरपुर वायु प्रदूषण की चपेट में आता जा रहा है। गांव की नालियों से निकलने वाले गंदे पानी को कई वर्षों से प्राचीन जोहड़ में डाला जा रहा है। गांव का प्राचीन जोहड़ रिहायसी क्षेत्र में है तथा जोहड़ के नजदीक सीएचसी व पशुओं का अस्पताल स्थित है। जोहड़ के दूषित पानी के कारण ग्रामीणों व सीएचसी स्टाफ को परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। ग्रामीणों ने बताया कि जोहड़ में जमा दूषित पानी की वजह से



मीरपुर के जोहड़ में जमा गंदा पानी

लोगों में सांस की बिमारी, डेंगू व कैसर जैसी धातक बीमारी होने का डर बना हुआ है। गंदे पानी के कारण आसपास के पेड़-पौधों को भी नुकसान पहुंच रहा है। गंदे पानी के कारण जोहड़ में



पशु अस्पताल के रास्ते में डाला गया कचरा

मछलियां भी दम तोड़ रही है। इसके अलावा कुछ लोगों की ओर से जोहड़ से पशु अस्पताल जाने वाले रास्ते पर कचरा डालकर आधेसे ज्यादा बंद किया हुआ है। जागरूक नागरिकों ने सरकार व प्रशासन से गांव में सीवर

आईटीआई में पीएम रोजगार मेला कल

रेवाड़ी। प्रदेश में जिला गुरुग्राम के बाद जिला रेवाड़ी युवाओं को रोजगार प्रदान करता है। वर्ष 2024 में आईटीआई में 10 हजार 200 से अधिक युवाओं को विभिन्न औद्योगिक कंपनियों में प्रशिक्षण व नियमित रूप में रोजगार उपलब्ध कराया है। आईटीआई के प्राचार्य सुनील कुमार यादव ने बताया कि संस्थान लगातार युवाओं के कल्याण के लिए रोजगार मेला और परिसर साक्षात्कार आयोजित कर रहा है। हरियाणा सरकार के रोजगार विभाग के निदेशालय के निर्देश पर 11 अगस्त को चौथा प्रधानमंत्री रोजगार मेला लगाया जा रहा है। इसके लिए पूरी तैयारी कर ली गई है। उन्होंने बताया कि मेले में 2000 से अधिक तकनीकी अथवा गैर तकनीकी रिक्त पदों पर युवाओं के चयन की प्रक्रिया चलेगी। 40 से अधिक कंपनियों के प्रतिनिधि अधिकारी राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान में रिक्त पदों की योग्यता के अनुसार युवाओं को चुनेंगे। प्राचार्य ने बताया कि 11 अगस्त को सुबह 9 बजे से मेला शुरू होगा, जिसका शुभारंभ डीसी अभिषेक मीणा करेंगे। उन्होंने बताया कि इस आयोजन के लिए परिसर में हेल्थ डेस्क स्थापित की जाएगी, जो युवाओं का मार्गदर्शन करेगी। इनके लिए स्टाफ को अलग-अलग जिम्मेदारी सौंपी गई है। रोजगार अधिकारी प्रदीप यादव ने बताया कि मेले में 18 वर्ष से अधिक आयु के तकनीकी और विना तकनीकी अनुभव वाले युवाओं को भी साक्षात्कार देने का मौका मिलेगा।

विधायक लक्ष्मण सिंह यादव ने सिंथेटिक ट्रैक के निर्माण कार्य का नारियल फोड़कर शुभारंभ किया

आरटीआर स्टेडियम में सिंथेटिक ट्रैक के कार्य का शुभारंभ, छह माह में मिलेगी खिलाड़ियों का सुविधा

■ स्टेडियम में पहुंचने पर खेल अधिकारियों व कोच ने विधायक का स्वागत किया

हरिभूमि न्यूज ॥ रेवाड़ी

दिल्ली रोड स्थित राव तुलाराम स्टेडियम में शनिवार को 9.67 करोड़ की लागत से बनने वाले सिंथेटिक ट्रैक के निर्माण कार्य का शुभारंभ किया गया। विधायक

लक्ष्मण सिंह यादव ने सिंथेटिक ट्रैक के निर्माण कार्य का नारियल फोड़कर शुभारंभ किया। स्टेडियम में पहुंचने पर खेल अधिकारियों व कोच ने विधायक का स्वागत किया। इस अवसर पर विधायक लक्ष्मण सिंह यादव ने कहा कि गत दिनों इसी स्टेडियम में आयोजित धन्यवाद रैली में प्रदेश के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने सिंथेटिक ट्रैक बनाने की घोषणा की थी। उन्होंने खेल विभाग के अधिकारियों को बधाई



रेवाड़ी। सिंथेटिक ट्रैक कार्य का शुभारंभ करने के उपरांत कोच से जानकारी लेते विधायक। फोटो: हरिभूमि

देते हुए कहा कि जल्द ही इस ट्रैक के निर्माण कार्य की प्रक्रिया शुरू कर दी

गई है। उन्होंने कहा कि करीब छह माह के अंदर ट्रैक का निर्माण कार्य पूरा हो जाएगा तथा दिल्ली व बड़े शहरों की तर्ज पर यहां के खिलाड़ियों को बेहतर सुविधाएं उपलब्ध होंगी। यह ट्रैक रेवाड़ी के लिए एक बड़ी सौगात साबित होगा। विधायक ने कहा कि स्टेडियम के भव्य मुख्य द्वार, स्टेडियम में राव तुलाराम की प्रतिमा व हाई मास्क लाइटों सहित अन्य खेल सुविधाएं भी जल्द उपलब्ध कराई जाएगी।

उन्होंने स्टेडियम में प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले खिलाड़ियों व बच्चों से भी आह्वान किया कि वे इन सुविधाओं को लाभ उठाएं तथा अपनी प्रतिभा के बल पर क्षेत्र का नाम रोशन करें। इस मौके पर भाजपा नेता दीपक मंगला, संजय चौहान, कोच चरण सिंह यादव, कोच अनिल यादव व रोशनलाल सहित भाजपा कार्यकर्ता, खेल विभाग के अधिकारी व खिलाड़ी मौजूद थे।

तय कर सही स्कीम में निवेश | म्यूचुअल फंड और गोल्ड निवेश | अपनी पूरी रकम एक ही जगह करने से मिलेगा फायदा | करके बड़ा फंड तैयार करें | निवेश न करें, विविधता रखें

प्लानिंग बनाकर करें निवेश, 10 साल में बन सकते हैं करोड़पति

निवेश मंत्रा

बिजनेस डेस्क

जब भी बात करोड़पति बनने की आती है तो ऐसा लगता है कि यह बहुत मुश्किल है। काफी लोग एक लाख रुपये महीने की सैलरी होने के बावजूद एक करोड़ रुपये का फंड इकट्ठा नहीं कर पाते हैं। हालांकि यह प्लानिंग के साथ निवेश किया जाए तो यह कुछ मुमकिन है। आप सही प्लानिंग के जरिए निवेश करके मात्र 10 साल में ही करोड़पति बन सकते हैं। अगर आपकी उम्र 35 साल है और आप अगले 10-12 सालों में 1 करोड़ रुपये का फंड बनाना चाहते हैं, तो ये जानकारी आपके लिए काफी अहम हो सकती है।

जानकारों के अनुसार म्यूचुअल फंड और गोल्ड आदि जगह निवेश करके बड़ा फंड तैयारी किया जा सकता है। म्यूचुअल फंड का रिटर्न शेयर मार्केट के प्रदर्शन पर निर्भर करता है। जानकारों के मुताबिक पूरी रकम एक ही जगह निवेश न करें। पोर्टफोलियो में विविधता होनी चाहिए। एक्सपर्ट के अनुसार करोड़पति बनने के लिए जल्द से जल्द निवेश शुरू कर देना चाहिए। अगर कोई शख्स 35 साल की उम्र में निवेश शुरू करता है तो वह 10 से 12 साल में करोड़पति बन सकता है। हालांकि इस दौरान निवेश में रिस्क लेना भी जरूरी होगा। इसके लिए कुछ रिस्क लें और लंबी

सोने में निवेश को लेकर अलग-अलग एक्सपर्ट की राय अलग-अलग है। कुछ जानकार सोने में निवेश को अच्छा मानते हैं तो कई का कहना है कि इसमें रिटर्न कोई फिक्स नहीं है। इतिहास में ऐसे कई मौके आए हैं जब सोने ने नेगेटिव रिटर्न दिया है। यानी इसने निवेशकों का नुकसान किया है। वहीं कई बार पॉजिटिव रिटर्न न के बराबर रहा है।



अवधि के निवेश का प्लान तैयार कर आगे बढ़ें। इससे आप आसानी से करोड़पति बना पाएंगे और अपने धन से भविष्य को सुरक्षित कर पाएंगे। एक्सपर्ट कहते हैं कि कम रिस्क वाले निवेश से बहुत ज्यादा रिटर्न की उम्मीद नहीं करनी चाहिए। उदाहरण के लिए, लाजकैप स्कीम से पिछले पांच सालों में 14.02% का रिटर्न दिया है। इसका मतलब है कि अगर आप कम जोखिम लेंगे, तो आपको रिटर्न भी थोड़ा कम मिलेगा।

कहां करें निवेश

आप अपने पैसे को अलग-अलग जगहों पर निवेश कर सकते हैं। जैसे कि 20% बोध वाले फ्लेक्सिबल कैप फंड में, 20% वैल्यू वाले फ्लेक्सिबल कैप फंड में, 20% कॉन्स्ट्रा फंड में, 20% बोध वाले मिडकैप फंड में और 20% बोध वाले स्मॉल कैप फंड में निवेश कर सकते हैं। इस तरह से निवेश करने से आप अलग-अलग मार्केट कैप और स्ट्राइकल में निवेश कर पाएंगे। इससे आपके पैसे के डूबने का खतरा कम होगा और आपको अच्छा रिटर्न मिलने की संभावना बढ़ जाती है।

करोड़पति बनने के लिए कितना निवेश करें

अगर आप 10 साल में 12% सीएजीआर (कंपाउंडेड एनुअल ग्रोथ रेट) के साथ 1 करोड़ रुपये का फंड तैयार करना चाहते हैं, तो आपको हर महीने 45,000 रुपये एसआईपी के जरिए म्यूचुअल फंड में निवेश करनी होगी। वहीं, 12 साल में करोड़पति बनना चाहते हैं तो यह निवेश 35,000 रुपये महीने का होगा। हालांकि 10 से 12 साल बाद एक करोड़ रुपये की वैल्यू कम हो जाएगी। इसलिए एक्सपर्ट कहते हैं कि हर साल एसआईपी की रकम 5 से 10 फीसदी बढ़ाते जाएं।

गोल्ड कितना जरूरी

सोने में निवेश को लेकर अलग-अलग एक्सपर्ट की राय अलग-अलग है। कुछ जानकार सोने में निवेश को अच्छा मानते हैं तो कई का कहना है कि इसमें रिटर्न कोई फिक्स नहीं है। इतिहास में ऐसे कई मौके आए हैं जब सोने ने नेगेटिव रिटर्न दिया है। यानी इसने निवेशकों का नुकसान किया है। वहीं कई बार पॉजिटिव रिटर्न न के बराबर रहा है।

फाइनेंशियल सफलता की पहली सीढ़ी है खर्चों पर रोक लगाना और भविष्य के लिए आय का 20 फीसदी बचाना

- अपने मंथली बिलों व खर्चों को कम कर बचा सकते हैं पैसे
- अपने बचे हुए पैसे को सही जगह निवेश करें, बढ़ेगा पैसा

पैसों का करें बेहतर मैनेजमेंट, नहीं होंगे परेशान सैलरी को 'दीमक' की तरह खा जाते हैं बिल

निवेश मंत्रा

बिजनेस डेस्क

अक्सर लोगों को लगता है कि फाइनेंशियल रूप से मजबूत या फिर सफलता का मतलब बहुत ज्यादा पैसा कमाना है, लेकिन यह पूरी तरह सच नहीं होता है। असल में फाइनेंशियल सफलता की पहली और सबसे अहम सीढ़ी है अपने खर्चों पर रोक लगाना। जब आप अपने मंथली बिलों और खर्चों को कम करते हैं, तो फिर आपके पास बचत और इन्वेस्टमेंट के लिए अधिक पैसा बचता है। तभी आप अपने पैसे को बढ़ा पाते हैं। असल में यह कोई मुश्किल काम नहीं है, जो हां कुछ आसान और सुनियोजित कदम उठाकर आप अपने मंथली खर्चों को कम कर सकते हैं और एक मजबूत वित्तीय प्यूचर की नींव रख सकते हैं। इस रिपोर्ट में हम आपको बताते जा रहे हैं ऐसे की कुछ टिप्स जो आपको आर्थिक सफलता की ओर ले जाएंगे।

पहला कदम : अपने खर्चों को पहचानें

सबसे पहले, आपको यह जानना होगा कि आपकी मेहनत की कमाई का पैसा कहाँ जा रहा है। इसके लिए, आप कम से कम एक महीने तक अपने खर्चों को ट्रैक करना शुरू करें। अपने सभी खर्चों को एक कॉपी में या मोबाइल ऐप में लिखें। इसमें किराए, किराने का सामान, ईंधन, बिजली बिल से लेकर एक कप चाय का खर्च भी शामिल करें। यह कदम आपको यह समझने में मदद कर सकता है कि आप कहाँ-कहाँ फिजूलखर्च कर रहे हैं।

दूसरा कदम बजट बनाएं

एक बात साफ है कि जब आप अपने खर्चों को पहचान लेंगे, तो अगला कदम होगा एक मासिक बजट बनाना है। अपनी इनकम के हिसाब से हर चीज के लिए एक लिमिटेड तय करें। बजट बनाने से आपको अपने खर्चों को कंट्रोल करने में मदद मिल सकेगी। अपने खर्चों को दो पार्ट में बाँटें।

अहम खर्च : किराया, ईंधन, राशन, दवाई आदि।

गैर-जरूरी खर्च : बाहर खाना, ऑनलाइन शॉपिंग, मनोरंजन आदि।

तीसरा कदम : गैर-जरूरी खर्चों में कटौती

अधिक पैसा बचाने के लिए अपने गैर-जरूरी खर्चों में कटौती करें। इससे आपको हर महीने



पैसे बचने लगेगे। इस पैसे को आप अच्छी जगह पर निवेश करें। धीरे धीरे इस निवेश और बचत को बढ़ाते जाएंगे। इससे आपके हाथों में अधिक पैसा आएगा और आपकी बचत बढ़ती जाएगी। आप इन खर्चों में कर सकते हैं कटौती।

शॉपिंग : अनावश्यक और आवेगपूर्ण खरीदारी से बचें। जब कोई चीज जरूरी हो तभी खरीदें।

चौथा कदम : बड़े बिलों को कम करें

आपको अपनी बचत बढ़ाने के लिए अपने सबसे बड़े मासिक बिलों को कम करने के तरीके खोजने होंगे या कमाई को बढ़ाना होगा। कोई भी पारट्टाइन काम करें। फ्रीलान्सिंग भी कर सकते हैं। इससे आपको पैसे बचेंगे। बिजली का बिल ज्यादा है। गैर जरूरी उपकरणों को बंद कर दें। घर लाइट उतनी ही

जलाएँ, जितनी जरूरत हो। कुछ बिलों में ऐसे कर सकते हैं कटौती।

बिजली बिल : घर में एलईडी लाइट का यूज करें। पुराने और ज्यादा बिजली खाने वाले उपकरणों को बदलें और जरूरत न होने पर पंखे, एसी और लाइट बंद करें।

फोन और इंटरनेट : अपने फोन और इंटरनेट प्लान की तुलना करें। कई बार, कंपनियाँ बेहतर ऑफर दे रही होती हैं, जिनसे आपका बिल कम हो सकता है।

लोन की ईएमआई : अगर आपके पास पुराना लोन है, तो उसकी ब्याज दर को कम करने के लिए बैंक से बात करें।

पाँचवाँ कदम : बचत को प्राथमिकता दें

अपने मंथली खर्चों को कम करने के बाद, जो भी पैसा बचे उसे तुरंत बचत और इन्वेस्टमेंट में लगाएं। 'सूट्टे' को पहले मुगतान करें' के रूल को अपनाएं। इसका मतलब है कि सैलरी आने पर सबसे पहले बचत और इन्वेस्टमेंट के लिए पैसा निकालें, फिर बाकी बचे पैसे से खर्च करें। इससे साफ है कि मंथली बिलों को कम करना एक आदत है, जिसे लगातार कोशिश से अपनाया जा सकता है। यह कोई बड़ा काम नहीं होता है, बल्कि छोटे-छोटे कदमों का एक बड़ा रूप होता है। इन कुछ कदमों को उठाकर आप ना केवल अपने मंथली खर्चों को कम कर सकते हैं, बल्कि अपने वित्तीय लक्ष्यों को भी हासिल कर सकते हैं और एक सफेद प्यूचर की नींव रख सकते हैं।

स्टूडेंट लाइफ में फाइनेंशियल मैनेजमेंट घटा सकता है परेशानी, बजट बनाकर प्यूचर प्लानिंग भी छात्रों के लिए बेहतर

इन्हें अपनाएँ से कम पैसों में भी जी सकते हैं बाँस वाली जिंदगी

स्टूडेंट लाइफ में करें मनी मैनेजमेंट, भविष्य में धन की नहीं रहेगी कमी, अमीर बनने के लिए हर छात्र कुछ अहम टिप्स को अपनाएं

एक्स्ट्रा इनकम के ऑप्शन खोजें

प्लानिंग

बिजनेस डेस्क

विद्यार्थी लाइफ अक्सर उत्साह, सोचने और नए अनुभवों से भरा होती है, लेकिन इसी दौरान पैसों का मैनेजमेंट बहुत बड़ी चुनौती भी साबित हो सकता है। कॉलेज की फीस, किताबों का खर्च, हॉस्टल का किराया, खाना-पीना, और मनोरंजन के खर्च इन सभी को मैनेज करना कभी बार मुश्किल हो जाता है, लेकिन अगर स्टूडेंट लाइफ में ही बजट बनाना और पैसों का सही मैनेजमेंट सीख लिया जाए तो प्यूचर आर्थिक परेशानियों से बच सकते हैं। इसलिए जरूरी है कि छात्रों को शुरू से ही मनी मैनेजमेंट पर ध्यान देना चाहिए ताकि भविष्य की दिक्कतों से दूर रहा जा सके और छात्र आसानी से धनवान बन सकें। अच्छी फाइनेंशियल आदतें न केवल आपके कर्ज के जाल में फंसने से बचाती हैं, बल्कि आपको अपने टारगेट को प्राप्त करने में भी मदद करती हैं। इस रिपोर्ट में हम आपको बताएंगे ऐसे ही कुछ टिप्स जो आपको धनवान बना सकते हैं।

स्टूडेंट लाइफ में सेविंग्स की आदत डालना प्यूचर के लिए सबसे मजबूत नींव हो सकती है। सेविंग्स को कमी में जो बचेगा, वही बचाऊंगा की सोच से ना देखें, बल्कि इसे अपनी प्रायोरिटी बनाएं। छोटे-बड़े बचत लक्ष्य तय करें। जब कोई टारगेट तय होता है तो बचत करना आसान और प्रेरणादायक लगता है। हमेशा ट्राई करें कि आपकी आय का 10% या 20% हिस्सा सीधे बचत खाते में डालें।

अपनी इनकम को ट्रैक करें

हर छात्र को अपने फाइनेंशियल लाइफ को शुरूआत सबसे पहले अपनी इनकम और खर्चों को ट्रैक करना चाहिए। चाहे पॉकेट मनी हो, स्कॉलरशिप या पार्ट-टाइम जॉब का आमदनी हो, सबका हिसाब रखना जरूरी होता है। इसके लिए आप एक छोटी डायरी, कोई बजटिंग ऐप या एक्सेल शीट का सहारा ले सकते हैं। स्टूडेंट रोजमर्रा के छोटे-छोटे खर्च जैसे स्नैक्स, ऑटो किराया या ऑनलाइन सब्सक्रिप्शन को भी मंशन करें। यह आदत आपको अपनी फिजूलखर्चों समझने और उसे नियंत्रित करने में मदद करेगी, जिससे पैसों की बचत हो सकेगी।



आवश्यकताओं और इच्छाओं में अंतर समझें

अपने खर्चों को दो पार्ट में बाँटें-स्टूडेंट लाइफ में आर्थिक समझ को समझना बेहद जरूरी है, और इसकी शुरुआत होती है 'आवश्यकताओं' और 'इच्छाओं' के फर्क को समझने से। आवश्यकताएँ वो खर्च होते हैं जो लाइफ के लिए जरूरी हैं-जैसे ट्यूशन फीस, किताबें, रूम रेंट, खाना और आना-जाना, जबकि, इच्छाएँ वो चीजें हैं जो केवल सुख-सुविधा के लिए होती हैं, जैसे बाहर खाना, फिक्म देखना या नया गैजेट खरीदना, तो जब आप इन दोनों के बीच फर्क पहचान लेंगे, तो आप अपनी जरूरत पर फोकस करके जरूरी खर्चों पर लगाम लगाकर बेहतर फाइनेंशियल कंट्रोल बना सकते हैं।

50/30/20 का बजट बनाएं

अपनी इनकम और खर्चों को समझने के बाद अगला जरूरी कदम है एक सही मंथली बजट बनाना जाए। आप अपनी मासिक आय के अनुसार भोजन, कन्वेंशन, पढ़ाई की चीजें और मनोरंजन जैसी लिस्ट के लिए अलग-अलग पैसे तय करें। यह ध्यान रखें कि आपके कुल खर्च आपकी कुल आमदनी से अधिक ना हों। बजट बनाने के लिए आप 50/30/20 रूल का पालन कर सकते हैं, जैसे 50% राशि आवश्यकताओं पर, 30% इच्छाओं पर और 20% सेविंग्स या विक्रसी भी लोन की चुकौती के लिए रखें।

स्मार्ट खरीदारी करें और रियायतों का लाभ उठाएं

पैसों की बचत के लिए रियायतों और डील्ट्स का समझदारी से यूज करना बेहद फायदेमंद हो सकता है। जहाँ तक हो सके अपने स्टूडेंट आईडी कार्ड को साथ रखें और wherever possible उसे दिखाकर छूट पाने की कोशिश कर सकते हैं। आप किराने का सामान थोक में खरीदें और ऑफर्स या सेल पर नजर रखना चाहिए, इतना ही नहीं महंगे ब्रांड्स की बजाय सामान्य ब्रांड चुनना अधिक बजट-फ्रेंडली होता है।

एक्स्ट्रा इनकम के ऑप्शन खोजें

अगर आपका बजट लिमिटेड है तो खर्चों पर नियंत्रण के साथ-साथ इनकम बढ़ाने के ऑप्शन ढूँढ़ें। आप पार्ट-टाइम जॉब जैसे ट्यूटोरिंग, कैंपस असिस्टेंटशिप या फ्रीलान्सिंग का ऑप्शन चुन सकते हैं। साथ ही आपकी हॉबी भी कमाई का जरिया बन सकती है—जैसे ऑनलाइन कंटेंट बनाना, हैंडमेड क्राफ्ट्स बेचना या ब्लॉगिंग करना।

इमरजेंसी फंड बनाएं

अचानक आने वाले खर्चों के लिए हमेशा तैयार रहना बहुत जरूरी है, क्योंकि मेडिकल इमरजेंसी, लैपटॉप खराब होना या कोई भी अचानक से कोई भी खर्च सामने आ सकते हैं। इसके लिए आप एक अलग बचत खाता खोलकर उसमें धीरे-धीरे थोड़ी-थोड़ी राशि जमा करें। ऐसा करने से आपको महंगे पर्सनल लोन या क्रेडिट कार्ड का सहारा लेने की जरूरत नहीं पड़ेगी। छात्र बजट बनाना, खर्चों की प्राथमिकता तय करना और हर महीने की सेविंग्स तय करना सीखकर फाइनेंशियल मैनेजमेंट की शुरुआत कर सकते हैं।

दिनभर छाए रहे बादल: हल्की बूदाबांदी, गर्मी से मिली राहत

हरिभूमि न्यूज नारनौल

पिछले एक सप्ताह से हरियाणा एनसीआर दिल्ली में मानसून ब्रेक की स्थिति बनी हुई थी, क्योंकि मानसून टर्फ उत्तरी पर्वतीय क्षेत्रों के तराई क्षेत्रों पर विराजमान रही। जिससे हरियाणा के उत्तरी जिलों में लगातार मानसून सक्रिय बना रहा, जबकि शेष हरियाणा में कहीं कहीं केवल खंड बारिश की गतिविधियां देखने को मिली, साथ ही लगातार पश्चिमी हवाएं चलने से सम्पूर्ण इलाके में धीरे धीरे दिन व रात के तापमान में बढ़ोतरी दर्ज हुई।

शनिवार को जैसे ही मानसून टर्फ उत्तरी पर्वतीय से वापस हरियाणा एनसीआर दिल्ली पर पहुंची, वैसे ही एक बार फिर से हरियाणा एनसीआर दिल्ली पर मानसून गतिविधियां देखने को मिली। हरियाणा के पूर्वी पानीपत, सोनीपत, व एनसीआर दिल्ली तथा दक्षिणी जिलों फरीदाबाद, पलवल, मेवात, गुडगांव, रेवाड़ी में अच्छी बारिश, जबकि महेंद्रगढ़, चरखी दादरी व मध्यवर्ती जिलों झज्जर, रोहताक, के साथ जींद, कैथल, भिवानी, हिसार में हल्की बारिश व बूदाबांदी हुई। हरियाणा एनसीआर दिल्ली में अधिकतर

स्थानों पर हल्की बारिश व बूदाबांदी हुई। जिससे सम्पूर्ण इलाके में दिन व रात के तापमान में हल्की गिरावट देखने को मिली। हरियाणा एनसीआर दिल्ली में अधिकतर स्थानों दिन व रात के तापमान सामान्य से नीचे बने हुए हैं। जिले में सुबह से शाम तक लगातार बादलों की आवाजाही के बीच हल्की बारिश व बूदाबांदी हुई। जिससे मौसम सुहावना बना रहा। जिले में नारनौल व महेंद्रगढ़ का दिन तथा रात का तापमान क्रमशः 34.5, 25.5 डिग्री सेल्सियस व 34.0, 27.2 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया।



नारनौल। आसमान में छाए बादल। फोटो: हरिभूमि

क्या कहते है मौसम विशेषज्ञ

मौसम विशेषज्ञ डॉ. चंद्र मोहन ने बताया कि पिछले कुछ दिनों से देश के बड़े हिस्सों में विशेषकर हरियाणा एनसीआर दिल्ली में दक्षिण पश्चिम मानसून कमजोर हो गया था। हरियाणा एनसीआर दिल्ली में ब्रेक इन मानसून की स्थिति ने उन इलाकों में भी बारिश कम कर दी है। जहां इस समय इसकी सबसे ज्यादा जरूरत होती है। हालांकि यह मौसम की सामाजिक प्रक्रिया है और दिना की बात तभी बनी है, जब यह दौर लंबा खींच जाए, केवल एक सप्ताह के अंतराल बाद धीरे धीरे एक बार फिर से मानसून की धारा हरियाणा एनसीआर दिल्ली पर बनी है। वर्तमान में मानसून टर्फ मटिया, रोहताक, दिल्ली, हरदोई, बारबांकी, देहली से बंगाल की खाड़ी तक फैली हुई है, साथ ही एक ऊपरी हवाओं का चक्रवातीय सर्कुलेशन पश्चिमी उत्तर प्रदेश व आसपास के क्षेत्रों पर बना हुआ है। इस चक्रवातीय सर्कुलेशन से गुजरात तक एक टर्फ बनी हुई है, साथ ही इस चक्रवातीय सर्कुलेशन से झारखंड तक एक अलग टर्फ बनी हुई है। इन मौसम प्रणालियों के संयुक्त प्रभाव से हरियाणा एनसीआर दिल्ली में अगले दो तीन दिन तक मौसम परिवर्तनशील बना रहेगा और बिखराव वाली बारिश व बूदाबांदी जारी रहेगी। इसके अलावा एक जया कम दबाव का क्षेत्र जल्द ही 13 अगस्त को बंगाल की खाड़ी पर बनने तथा वह डिप्रेशन में तब्दील होने से अगल इस मौसम प्रणाली का ट्रेक राजस्थान तक बना तो हरियाणा एनसीआर दिल्ली पर 15 से 21 अगस्त के दौरान एक बार फिर से मानसून में सक्रियता देखने को मिलेगी।

खबर संक्षेप



महेंद्रगढ़। पौधरोपण करते स्कूल के विद्यार्थी। फोटो: हरिभूमि

बचपन प्ले स्कूल के बच्चों ने लगाए पौधे

महेंद्रगढ़। मोहल्ला जवाहरनगर स्थित बचपन प्ले स्कूल व ओम साईराम एकेडमिक हाइट्स पब्लिक स्कूल के बच्चों ने शहर के आईटीआई रोड के बीच में बने हुए डिवाइड पर लगभग 400 पौधे लगाए गए, जिनमें मुख्य रूप से कनेर, टपोरी, गुडहल, पाम खजूर तथा रंग बिरंगे फूलों के पौधे शामिल थे। जानकारी देते हुए विद्यालय चेरमैन रमेश सैनी एवं चेरपरसन निशा सैनी ने बताया कि यह सभी पेड़ पौधे विद्यालय के बच्चों द्वारा एकत्रित किए गए पैसों से लगाए गए हैं। इस अवसर पर प्राचार्या ज्योति शर्मा, बचपन हेड रूपाली अरोड़ा, उप प्राचार्या मोनिका दीवान, प्रवक्ता अमरसिंह सोनी व पूरम गोस्वामी आदि उपस्थित रहे।

पौधे को राखी बांधकर लिया सुरक्षा का संकल्प

महेंद्रगढ़। अनहद शक्ति फाउंडेशन रक्षाबंधन पर्व पर पेड़ों की सुरक्षा का संकल्प लेकर उन्हें राखी बांधी और उनकी पूर्ण देखभाल की जिम्मेदारी लेते हुए पर्यावरण को हरा भरा बनाने के लिए प्रतिवर्ष पौधरोपण कार्यक्रम मनाने का लक्ष्य रखा गया। अनहद शक्ति फाउंडेशन की अध्यक्ष शैलजा यादव ने उपस्थित परिवार के सभी साधकों पेड़ों की रक्षा करने की शपथ दिलाई।

अटेली क्षेत्र में मनाया रक्षाबंधन का त्यौहार

मंडी अटेली। शनिवार को अटेली क्षेत्र रक्षाबंधन का त्यौहार धूमधाम से मनाया गया। रक्षाबंधन पर्व भाई-बहन के अटूट प्रेम का प्रतीक माना जाता है। यह त्यौहार हर साल श्रावण मास की पूर्णिमा के दिन मनाया जाता है। भाई-बहन के इस पवित्र त्यौहार के दिन बहन अपने भाई को प्यार के डोर के रूप में राखी बांधती है।

नारनौल। राकेश महता को सम्मानित करते हुए। फोटो: हरिभूमि

प्रधान राकेश मेहता को रोटरी क्लब ने किया सम्मानित

नारनौल। रोटरी क्लब सिटी की ओर से श्रीगौड़ ब्रह्मण समा के लगातार तीसरी बार प्रधान चुने जाने पर राकेश मेहता एडवोकेट के सम्मान समारोह का आयोजन महावीर चौक स्थित रोटरी रोड पर किया। क्लब प्रधान राजकुमार चौधरी ने सम्स्त कार्यक्रमों सहित गौड़ ब्रह्मण समा प्रधान राकेश मेहता, समा के कार्यकारिणी सदस्य अमित पांडे, प्रतीक कोशिक व एडवोकेट रवि शर्मा को अंग वस्त्र पहनाकर सम्मानित किया। इस अवसर पर गौड़ ब्रह्मण समा के प्रधान राकेश मेहता ने कहा कि रोटरी क्लब क्षेत्र में लगातार जनहित कार्यों के लिए जाना जाता है। शहर में जस्ूरतमंदों के लिए हर्ष क्षेत्र में क्लब ने अपना अमूल्य योगदान दिया है। रोटरी प्रधान राजकुमार चौधरी ने उन्हें सम्मानित करते हुए कहा कि किसी भी समाज का अध्यक्ष उसकी धुरी होता है, जो अपने समाज को आगे बढ़ाने व दिशा देने का कार्य करता है। एडवोकेट राकेश मेहता को लगातार तीसरी बार चुनकर अपना प्रतिनिधित्व उन्हें सौंपा है। इस मौके पर राजकुमार चौधरी, एडवोकेट राजकुमार यादव, प्रतीक संधी, गोपाल मिश्र, संजय गर्ग, विनोद चौधरी, नरेश गोगिया, नितिन अग्रवाल, पवन गुप्ता, सुनील गौड़ आदि मौजूद थे।

आयोजन में काफी संख्या में विप्रजनों ने लिया भाग

वेद मंत्रों से गूँज उठी महर्षि च्यवन की तपोस्थली ढोसी

सर्वप्रथम सभी विप्रजनों ने शिवकुंड में खड़े होकर जलक्रिया के दौरान वेद मंत्रों से सभी नदियों का आह्वान कर ऋषि तर्पण व पितृ तर्पण किया।

हरिभूमि न्यूज नारनौल

शारदा संस्कृत महाविद्यालय की ओर से शनिवार को महर्षि च्यवन की तपोस्थली ढोसी धाम के शिवकुंड पर विप्रजनों ने अपना पर्व श्रावणी उपाकर्म वेद मंत्रों के साथ बड़ी श्रद्धा व आस्था के साथ मनाया। श्रावणी उपाकर्म शारदा संस्कृत महाविद्यालय के आचार्य देवदत्त शास्त्री के सानिध्य में आयोजित किया गया। आचार्य क्रांति निर्मल ने वेद मंत्रों के साथ इस पूरे कार्यक्रम को संपन्न करवाया। सर्वप्रथम सभी विप्रजनों ने शिवकुंड में खड़े होकर जलक्रिया के दौरान वेद मंत्रों से सभी नदियों का आह्वान कर ऋषि तर्पण व पितृ तर्पण किया। इसके बाद सभी ब्राह्मणों ने मंदिर परिसर में सप्त ऋषियों का पूजन व हवन कर नए यज्ञोपवीत धारण किए। इस पूजन कार्यक्रम में बतौर यजमान गौड़ सभा के पूर्व



नारनौल। शिव कुंड ढोसी में स्नान करते विप्रजन व ढोसी में आयोजित कार्यक्रम में भाग लेते विप्रजन।



फोटो: हरिभूमि

प्रधान शिवकुमार मेहता, सहसचिव हेमंत भारद्वाज सिंहमा, कार्यकारिणी सदस्य अमित पांडे व एडवोकेट मनोष वशिष्ठ ने शिरकत की। इस दौरान शारदा संस्कृत महाविद्यालय के विद्वान पंडितों ने महर्षि च्यवन के ढोसी धाम को वेद मंत्रों की मधुर ध्वनि से गुंजायमान कर दिया। कार्यक्रम के दौरान शारदा संस्कृत महाविद्यालय के 11 नए ब्रह्मचारियों को यज्ञोपवीत धारण कराया। इस अवसर पर आचार्य क्रांति निर्मल ने कहा कि श्रावणी पर्व ब्राह्मणों का सबसे बड़ा

पर्व है। उन्होंने कहा कि इस दिन हम सभी देवताओं व सप्त ऋषियों का पूजन करते हैं और अपनी शुद्धि करते हैं। आचार्य ने कहा कि आज संस्कृत दिवस भी है और संस्कृत देव वाणी है, इसलिए हम सभी ब्राह्मणों को इसका ज्ञान होना चाहिए। आचार्य ने सभी को यज्ञोपवीत की महिमा के बारे में भी विस्तार से बताया। उन्होंने कहा कि आने वाली पीढ़ी को संस्कार देने व सनातन धर्म को बचाए रखने के लिए इस तरह के आयोजन की नितांत आवश्यकता है।

ये रहे मौजूद

इस मौके पर हंसराज मेहता कॉलेजियम सदस्य, देशराज मेहता कॉलेजियम सदस्य, महेश मेहता कॉलेजियम सदस्य गौड़ समा, नागेंद्र वर्त शर्मा, गोपाल शास्त्री, राजेश बोहरा शास्त्री, रविंद्र शास्त्री, आचार्य बजरंग शास्त्री, रविंद्र शास्त्री, दीपक शास्त्री, पंडित मनोज शास्त्री, मनोष शास्त्री, पंडित नवीन कोशिक, भूपेश शास्त्री, रोमक पुजारी, पंडित मदन शर्मा, कुरलदीप निर्मल आदि सहित शारदा संस्कृत महाविद्यालय ब्रह्मचारी मौजूद थे।

राहुल गांधी मानसिक रूप से दिवालियापन के कगार पर: एडवोकेट राकेश शर्मा

नारनौल। भाजपा प्रदेश प्रवक्ता एडवोकेट राकेश शर्मा ने प्रेस के नाम जारी एक विज्ञापित में कहा कि जिस प्रकार से विपक्ष के नेता राहुल गांधी भारत की संवैधानिक संस्थाओं को धमकाते हैं अर्नाल प्रलाप कर रहे हैं यह इनकी मानसिक दिवालीपन की पहचान है। जो लोग राजनीतिक रूप से हाताश निराश हैं और जिन्होंने जनता के विश्वास को खो दिया है वो उसमें अपनी कमियों के ढूँढने की बजाय, जनता से जुड़ने की बजाय हमारी संवैधानिक संस्थाओं पर आए दिन आरोप प्रत्यारोप करते रहते हैं और इन्होंने जिस प्रकार से चुनाव आयोग को टारगेट किया है यह एक बड़ा ही निंदनीय कृत्य है। क्योंकि जहां-जहां यह चुनाव जीते हैं वहां पर लड़ बान्टेन का काम करते हैं और जहां यह चुनाव हार जाते हैं वहां यह चुनाव आयोग पर प्रश्न चिन्ह लगाने का काम करते हैं। इनको इतिहास में झांकना चाहिए कि किस प्रकार से इन्होंने संवैधानिक संस्थाओं का समय-समय पर दुरुपयोग किया है और यह अपनी हार को पचा नहीं पा



देश विरोधी बयानों के कारण यह अपना विश्वास खो चुकी है। कांग्रेस धरातल की तरफ जा रही है। देश के अंदर ऐसे-ऐसे राज्य हैं जिसमें पिछले कई सालों से कांग्रेस की सरकार नहीं बनी है। इनके बारे में उनको चिंतन मनन करना चाहिए। कभी यह प्रधानमंत्री पर टिप्पणी करते हैं कभी चुनाव आयोग पर टिप्पणी करते हैं कभी सुप्रीम कोर्ट पर टिप्पणी करते हैं हम इसकी कड़ी भर्त्सना करते हैं। इसका खामियाजा इनको आने वाले दिनों में भी इनको भुगतना पड़ेगा। कांग्रेस घास की तरह कांग्रेस भी देश के लिए घातक है।

रहे हैं। उन्होंने कहा कि जिस प्रकार से कांग्रेस ने चुनाव आयोग पर महाराष्ट्र और कर्नाटक पर टिप्पणी की यह इनके स्वार्थ को दर्शा रही है इनकी अज्ञानता का प्रतीक है। कांग्रेस ने जनता के विश्वास को खो दिया है और जिस प्रकार से अपरिपक्व बतों संसद के बाहर और संसद के अंदर करते हैं इसके कारण देश की जनता इनको पहचान चुकी है और उनकी अपरिपक्वता के कारण और देश विरोधी बयानों के कारण यह अपना विश्वास खो चुकी है। कांग्रेस धरातल की तरफ जा रही है। देश के अंदर ऐसे-ऐसे राज्य हैं जिसमें पिछले कई सालों से कांग्रेस की सरकार नहीं बनी है। इनके बारे में उनको चिंतन मनन करना चाहिए। कभी यह प्रधानमंत्री पर टिप्पणी करते हैं कभी चुनाव आयोग पर टिप्पणी करते हैं कभी सुप्रीम कोर्ट पर टिप्पणी करते हैं हम इसकी कड़ी भर्त्सना करते हैं। इसका खामियाजा इनको आने वाले दिनों में भी इनको भुगतना पड़ेगा। कांग्रेस घास की तरह कांग्रेस भी देश के लिए घातक है।

कनीना से बाइक चोरी कार ने बाइक सवार को मारी टक्कर

कनीना। नहर के समीप खड़ी की गई बाइक अज्ञात चोर चोरी कर ले गए। इस बारे में ललित वासी निंबी ने सिटी थाना पुलिस को दी शिकायत में बताया कि वह कोसली से अपने गांव निंबी जा रहा था। रास्ते में कोटिया नहर के पास दुकान बाइक खराब हो गई। जिसे वहीं पर खड़ी करके चला गया। सुबह आकर देखा तो बाइक वहां नहीं मिली। पुलिस ने बाइक चोरी का केस दर्ज कर छानबीन शुरू कर दी है।

नांगल चौधरी। कोरियावास मेडिकल कॉलेज के सामने एक अनियंत्रित शिफ्ट डिजायर कार ने बाइक सवार को टक्कर मार दी। हादसे में गंभीर रूप से घायक बाइक सवार को नारनौल के एक निजी अस्पताल में भर्ती कराया गया। जहां स्थिति नाजुक होने पर पीडित को जयपुर रेफर कर दिया। पीडित के परिजनों की शिकायत पर पुलिस ने केस दर्ज करके कार्रवाई आरंभ कर दी है। कोरियावास निवासी दीपक शर्मा पुत्र रामकिशोर नारनौल से गांव जा रहा था। मेडिकल कॉलेज के सामने एक अनियंत्रित कार ने बाइक को टक्कर मार दी। टक्कर इतनी तेज थी की पीडित करीब 10 फीट दूर जाकर गिरा। धरना स्थल पर बैठे लोगों ने तत्परता पूर्वक पीडित को नारनौल के एक निजी अस्पताल में भर्ती कराया। जहां चिकित्सकों ने अथक प्रयास करने के बावजूद होश नहीं आया। नाजुक हालात को देखते हुए चिकित्सकों ने पीडित को जयपुर के लिए रेफर कर दिया।

दी केंद्रीय सहकारी बैंक की बैठक में प्रस्तुत किया बैंक का लेखा-जोखा

हरिभूमि न्यूज महेंद्रगढ़

शहर के रेलवे रोड स्थित दी महेंद्रगढ़ केन्द्रीय सहकारी बैंक में 58वीं वार्षिक आमसभा आयोजित की गई, जिसकी अध्यक्षता बैंक के चेरमैन राजेन्द्र शर्मा ने की। इस दौरान बेहतरीन कार्य करने वाली बैंक की शाखाओं व पैक्स को सम्मानित किया गया। बैंक के महाप्रबंधक प्रशांत यादव ने वित्त वर्ष 2024-25 की बैलेंस सीट और लाभ-हानि खाता सभा पटल पर प्रस्तुत करते हुए बताया कि हमारे बैंक के प्रति ग्राहकों का विश्वास बढ़ता जा रहा है, जिसके चलते डिपॉजिट में लगातार वृद्धि हो रही है। बैंक ने गत वित्त वर्ष 7.24 करोड़ रुपये का लाभ अर्जित किया है। बैंक द्वारा किसानों सहित सभी वर्ग को आधुनिक बैंकिंग



महेंद्रगढ़। किसानों को सम्मानित करते विधायक कंवर सिंह यादव। फोटो: हरिभूमि

सुविधाएं दी जा रही हैं। महाप्रबंधक ने बताया कि महेंद्रगढ़ हरियाणा का एकमात्र जिला है, जिसकी सभी पैक्स कम्प्यूटरीकृत हो चुकी हैं। विधायक एवं बैंक के निदेशक कंवर सिंह यादव ने कहा कि हरियाणा सरकार द्वारा किसानों को बिना ब्याज का ऋण दिया जा रहा है तथा किसानों के लिए अनेक कल्याणकारी योजनाएं भी लागू की गई हैं। जिला महेंद्रगढ़ में भरपुर खाद आ रही है तथा पैक्स के माध्यम से जिले के किसानों को इसका त्वरित लाभ मिलना चाहिए। उन्होंने कहा कि बैंक द्वारा अपने ग्राहकों को लोन के साथ-साथ सभी आधुनिक सुविधाएं बिना किसी परेशानी के मिलनी



कनीना। एसडी स्कूल में आयोजित समारोह में हिस्सा लेते विद्यार्थी। फोटो: हरिभूमि

एसडी विद्यालय में रंगारंग कार्यक्रम आयोजित

कनीना। एसडी स्कूल ककराला में रक्षाबंधन के पर्व पर रंगारंग कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें विद्यार्थियों ने बड़ चढ़कर भाग लिया। सांस्कृतिक कार्यक्रम में सावन के गीतों ने संगम बांध दिया। वहीं राखी बनाओ प्रतियोगिता में तिरंगा राखी ने मन मोह लिया। नर्सरी कक्षा से लेकर आठवीं तक के विद्यार्थियों ने मनमोहक राखी बनाई। इसके अलावा रंग भरो, स्लोगन प्रतियोगिता व तिरंगा यात्रा भी निकाली गई। छात्रों ने रक्षाबंधन के महत्व व भाई बहन के पवित्र रिश्ते को धरातल पर उतारा। स्कूल के प्राचार्य ओमप्रकाश ने छात्रों की प्रतिभा की सराहना करते हुए प्रोत्साहित किया। चेरमैन जगदेव यादव ने सभी विद्यार्थियों व स्टाफ सदस्यों को रक्षाबंधन पर्व की बधाई दी।



नारनौल। जन्मदिवस पर पूर्व मंत्री कर्नल राव रामसिंह को नमन करते हुए।

पूर्व मंत्री कर्नल राव रामसिंह को किया याद

नारनौल। पूर्व मंत्री कर्नल राव रामसिंह के 100वें जन्मदिवस पर सिंधाना रोड स्थित आदर्श कनॉली वर्कशॉप पर उन्हें नमन किया गया। इस मौके पर उनके चित्र पर पुष्प अर्पित किए गए तथा लहू बॉटकर खुशी मनाई गई। कार्यक्रम संयोजक संजय मिश्रा ने बताया कि कर्नल साहब सेना से रिटायर्ड होने के बाद राजनीति में सक्रिय हुए। उन्होंने हरियाणा विधानसभा में स्पीकर पद को सुशोभित किया। हरियाणा सरकार में शिक्षा मंत्री बनकर गरीब और असहाय लोगों के लिए कार्य किए। परिवहन मंत्री बनकर उड़तेज बड़े में सुधार किया। केंद्र सरकार में बंडर भूमि विकास मंत्री बने। इस कार्यक्रम का आयोजन संजय मिश्रा बापडौली ने किया। इस अवसर पर रिटायर्ड हैडमास्टर केहर सिंह, शंकर मिश्रा, दीप मिश्रा, राजू मिश्रा, विक्रम मिश्रा, मनोज मिश्रा, अनिल मिश्रा, राजवीर यादव, सिंहराज पटेल, महेंद्र कबाड़ी, चांद व सूरज कुमार आदि कार्यक्रम मौजूद रहे।



मंडी अटेली। बाबा भोमिया यूथ क्लब की ओर से मेले में सम्मानित करते हुए।

कबड्डी के फाइनल मैच में कन्हौरी की टीम रही प्रथम

मंडी अटेली। बाबा भोमिया मेला कमेटी व समस्त वामवासीयों की ओर से गांव खेरी में बाबा भोमिया का मेला आयोजित किया गया। मेले में मुख्य अतिथि समाजसेवी दयाराम यादव वजीरबाद ने विजेता खिलाड़ियों को पुरस्कार कर सम्मानित किया। कबड्डी के फाइनल मैच में कन्हौरी की टीम प्रथम रही, जबकि गादला गांव की टीम द्वितीय स्थान पर रही। कन्हौरी की टीम प्रथम टीम को 21 हजार व द्वितीय 15 हजार रुपये का पुरस्कार दिया गया। मेले में मंच संचालन राकेश कुमार ने किया। मेला कमेटी व सरपंच बजरंग सिंह व सुबेदार राजेंद्र शर्मा ने बताया कि कबड्डी के 65 कैंची भार के डू एंड डाई में धरणा प्रथम को 21 हजार व द्वितीय कन्हौरी 15 हजार रुपये का पुरस्कार दिया गया। इस मौके पर सरपंच बजरंग सिंह, जिला पाबंद मुनीपाल, मेला कमेटी प्रधान रविंद्र सिंह, मयंक यादव, अनंत सिंह, सुबेदार बिरेन्द्र सिंह, सुबेदार राजेंद्र शर्मा, राजेंद्र साहब, महेश शर्मा, चरण सिंह, राहुल पंच, महिपाल, हवलदार कृष्ण सिंह आदि मौजूद थे।

त्रिवेणी लगाकर दिया पर्यावरण संरक्षण का दिया संदेश

महेंद्रगढ़। गांव बलावाया स्थित बाबा ब्रह्मचारी आश्रम सेवा समिति द्वारा प्रयास श्रीबालाजी संस्था के सहयोग से पर्यावरण संरक्षण का दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए पौधरोपण कार्यक्रम का आयोजन किया। इस दौरान समिति के सदस्यों ने बरगद, पीपल, नीम और बेलपत्र के चार त्रिवेणी संयोजनों को सांस्कृतिक स्थलों पर लगाया गया। समिति प्रवक्ता जुगल किशोर ने जानकारी देते हुए बताया कि यह अभियान समिति द्वारा हर वर्ष चलाया जाता है, जिसका उद्देश्य न केवल पौधरोपण करना है, बल्कि भारतीय संस्कृति में पवित्र माने जाने वाले वृक्षों के महत्व को जनमानस तक पहुंचाना भी है। बरगद, पीपल और बेलपत्र को त्रिवेणी कहा जाता है और इनका धार्मिक, सांस्कृतिक व पर्यावरणीय दृष्टि से विशेष महत्व है। समिति प्रधान राजेंद्र शर्मा ने बताया कि हमारी संस्था केवल पौधे लगाकर छोड़ नहीं देती, बल्कि उनका पालन-पोषण और संरक्षण भी सुनिश्चित करती है। इस अवसर पर पूर्व सरपंच किशनलाल, वेदप्रकाश नमरदार, पूर्व पंच ओमप्रकाश, रोहताश चौकीदार, अनिल व कृष्ण आदि उपस्थित रहे।

बजाड़ में पौधे लगाकर मनाया जन्मदिन

मंडी अटेली। अटेली क्षेत्र के गांव बजाड़ में राजवीर ने अपने पुत्र नमन के जन्मदिन पर पौधे लगाकर जन्मदिन मनाया। इस मौके पर राजवीर ने बताया कि हमें स्वच्छ हवा और शुद्ध वातावरण के लिए पेड़ लगाना बहुत जरूरी है। फिजूलखर्ची की जगह हमें ऐसे सामाजिक कार्य करके बच्चों की सुधियां मनानी चाहिए। बच्चों के हाथों से लगाए पौधे पेड़ का रूप धारण करके हमें ठंडी छांव देंगे। अच्छी जलवायु एवं पर्यावरण के लिए सभी नागरिकों को पौधरोपण करना चाहिए। इस मौके पर इंचार्ज जितेंद्र, धर्मापाल, राकेश, सुरेश, महिपाल व छोटेलाल आदि वार्मिंग उपस्थित



आवरण कथा

ओम मिश्रचल

हम सब देशवासी आगामी 15 अगस्त 2025 को भारत के 79वें स्वतंत्रता दिवस का उत्सव मनाएंगे। कदम-कदम आगे बढ़ते हुए हमने कई अमूर्तपूर्व सफलताएं हासिल कीं, नए-नए मुकाम को छुआ। हम निरंतर प्रगति पथ पर अग्रसर भी हैं। लेकिन आज भी देश में कुछ ऐसी चुनौतियां बरकरार हैं, जिनका निवारण किए बिना हम अपना प्राचीन गौरव प्राप्त नहीं कर पाएंगे। इसके लिए देश के हर नागरिक के मन में स्वाधीनता के प्रति सम्मान भाव होना अत्यंत आवश्यक है।

एक-एक कदम हौले-हौले चलते हुए हम सब भारत देश का 79वां स्वतंत्रता दिवस मनाते जा रहे हैं। एक लंबी यात्रा हमने आजादी के

बाद तय कर ली है। 1947 से 2025 तक की स्वातंत्र्योत्तर यात्रा में देश ने तमाम क्षेत्रों में बहुत तरक्की की है, कृषि उत्पादन एवं खाद्यान्न के क्षेत्र में आत्मनिर्भरता हासिल की है- यहाँ तक आते-आते सुख जाती हैं कई नदियाँ। हमें मालूम है पानी कहाँ ठहरा हुआ होगा। दुर्भाग्यवश धीरे-धीरे कलमकार भी अपनी नैतिकता भूलते गए। इसी पर कवि गोपाल सिंह ने अपनी एक गीत में लिखा है- तुझ-सा लहरों में बह लेता/ तो मैं भी सता, गह लेता/ ईमान बेचना चलता तो/ मैं भी महलों में बह लेता/ हर दिल पर झुकती चली मार/ आंसू वाली नमकीन कलम/ मेरा धन है स्वाधीन कलम/ आजादी मिलने का मोह भंग भी हुआ। धीरे-धीरे लेखक की स्वाधीन चेतना भी सुप्त हो गई, उसकी कलम पूंजीपतियों और इजारेदारों के गुण गाने लगी। यही वजह है कि विभाजन के देश और आजादी के लिए 1857 से किए गए संघर्ष के बाद और जलियांवाला बाग के नृशंस हत्या कांड के बाद मिली आजादी का फल फलने में होड़ लग गई। देश बनाने वाले और उसे स्वाधीन कराने वाले तो नेपथ्य में चले गए और स्वार्थी लोग चांदी काटने लगे। आजादी मिलने के बाद आजादी मिलने का मोहभंग भी उतना ही प्रभावी हुआ और होता गया। यह ऐसा ही दौर था, जब 'मैला आंचल', 'पानी के प्राचीर' और 'गंग दूबारी' जैसी रचनाएँ लिखी गईं। लिहाजा आजादी मिलने की उपलब्धियों की बंदरबांट

हम वर्ग ने निभाई अपनी भूमिका: आजादी की लड़ाई किसी एक व्यक्ति, मजहब, संस्कृति या समुदाय ने नहीं लड़ी थी। इसमें तैतौस करोड़ भारतीयों की सामूहिक भागीदारी रही थी। राजनैतिक आजादी तो सन 1947 में ही हमें मिल गई थी। लेकिन आजादी का मिलना तब सार्थक हो सकता है, जब सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक हर क्षेत्र में देश तरक्की, करता हुआ दिखे। यों तो इस आजादी को हासिल करने में नेता, पत्रकार, किसान, मजदूर, किशोर, युवा, वृद्ध, स्त्री-पुरुष सबका योगदान रहा। उसके परिणामस्वरूप ही हमें आजाद भारत मिल सका। आजादी के बाद हासिल उपलब्धियों को तो हम सब देखते ही हैं, लेकिन

दोहे / प्रो. शरद नारायण खरे



शोभित, सुरभित, तेजमय, पावन अरु अभिराम।
राष्ट्र हमारा मान है, लिए उच्च आराम।।

राष्ट्र-वंदना में करूं, करता हूँ यशगान।
अनुभवैय, उत्कृष्ट है, भारत देश मगन।।

नदियां, पर्वत, खेत, वन, सागर अरु मैदान।
नैसर्गिक सौंदर्यमय, मेरा हिंदुस्तान।।

लिए एकता प्रति मधुर, गीता और कुरान।
दीवाली-होली सुखद, एक्यभाव-पहचान।।

सारे जग में शान है, मान रहा संसार।
राष्ट्र हमारा है प्रखर, फैलाता उजियार।।

मातृ-पिता, गुरु, नारियां, पातीं नित सम्मान।
संस्कार मम राष्ट्र की, है चोखी पहचान।।

तीन रंग के मान से, हैं हम सब अभिभूत।
राष्ट्रवंदना कर रहे, भारत कां के पृत।।

राष्ट्रप्रेम अस्तित्व में, आया नवल विगान।
कण-कण करने लग गया, भारत का यशगान।।

भारत की सीमाओं पर, जमे हुए हैं लाल।
शौर्य, वीरता देखकर, रोते सभी निहाल।।

आजादी की वंदना, करता सारा देश।
आश्रो, रम्य रच दें यहाँ, वासंती परिवेश।।

79वां स्वतंत्रता दिवस

आजादी की फलश्रुति



एक लेखक हर क्षेत्र में आजादी की आकांक्षाओं के प्रतिफल को गहराई से महसूस करता है। वह नेता, अभिनेता, चिंतक, समाजशास्त्री एवं अर्थशास्त्री आदि अनेक भूमिकाओं में होता है।

वही होता है, जो बिना लाग-लपेट के देश की वाकई तरक्की को अपने मानक पर कसता है, तभी वह दुष्यंत कुमार के शब्दों में यह लिख सकता है- यहाँ तक आते-आते सुख जाती हैं कई नदियाँ। हमें मालूम है पानी कहाँ ठहरा हुआ होगा।

दुर्भाग्यवश धीरे-धीरे कलमकार भी अपनी नैतिकता भूलते गए। इसी पर कवि गोपाल सिंह ने अपनी एक गीत में लिखा है- तुझ-सा लहरों में बह लेता/ तो मैं भी सता, गह लेता/ ईमान बेचना चलता तो/ मैं भी महलों में बह लेता/ हर दिल पर झुकती चली मार/ आंसू वाली नमकीन कलम/ मेरा धन है स्वाधीन कलम/ आजादी मिलने का मोह भंग भी हुआ। धीरे-धीरे लेखक की स्वाधीन चेतना भी सुप्त हो गई, उसकी कलम पूंजीपतियों और इजारेदारों के गुण गाने लगी। यही वजह है कि विभाजन के देश और आजादी के लिए 1857 से किए गए संघर्ष के बाद और जलियांवाला बाग

के नृशंस हत्या कांड के बाद मिली आजादी का फल फलने में होड़ लग गई। देश बनाने वाले और उसे स्वाधीन कराने वाले तो नेपथ्य में चले गए और स्वार्थी लोग चांदी काटने लगे। आजादी मिलने के बाद आजादी मिलने का मोहभंग भी उतना ही प्रभावी हुआ और होता गया। यह ऐसा ही दौर था, जब 'मैला आंचल', 'पानी के प्राचीर' और 'गंग दूबारी' जैसी रचनाएँ लिखी गईं। लिहाजा आजादी मिलने की उपलब्धियों की बंदरबांट

हम वर्ग ने निभाई अपनी भूमिका: आजादी की लड़ाई किसी एक व्यक्ति, मजहब, संस्कृति या समुदाय ने नहीं लड़ी थी। इसमें तैतौस करोड़ भारतीयों की सामूहिक भागीदारी रही थी। राजनैतिक आजादी तो सन 1947 में ही हमें मिल गई थी। लेकिन आजादी का मिलना तब सार्थक हो सकता है, जब सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक हर क्षेत्र में देश तरक्की, करता हुआ दिखे। यों तो इस आजादी को हासिल करने में नेता, पत्रकार, किसान, मजदूर, किशोर, युवा, वृद्ध, स्त्री-पुरुष सबका योगदान रहा। उसके परिणामस्वरूप ही हमें आजाद भारत मिल सका। आजादी के बाद हासिल उपलब्धियों को तो हम सब देखते ही हैं, लेकिन

सरोकार

शैलेन्द्र सिंह

आजादी का मतलब सिर्फ गुलामी से मुक्ति भर नहीं होता। आजादी उस आत्मसम्मान, अधिकार और स्वाभिमान की अनुभूति है, जो किसी भी समाज के पूर्ण विकास के लिए बहुत जरूरी है। लेकिन जब हम आजादी की 78वां वर्षगांठ पर अपनी डिजिटल पीढ़ी यानी जेन जेड और अल्फा जनरेशन की तरफ नजर उठाकर देखते हैं, तो बहुत निराशा होती है, क्योंकि इन्हें आजादी की कीमत का मानो कोई भान ही नहीं है। दरअसल, इन पीढ़ियों के लिए आजादी एक डिफॉल्ट सेटिंग की तरह है। ये पीढ़ी किसी संघर्ष या बलिदान की विरासत की हिस्सेदार नहीं रही है और न ही इसे आजादी के लिए अपनी जिंदगी में किसी तरह की कोई कीमत चुकानी पड़ी है। ऐसे में इन्हें आजादी की कीमत भी समझ आए तो भला कैसे?

डिजिटल जनरेशन की दुनिया: हमारी जेन जेड और अल्फा जनरेशन वास्तव में डिजिटल जनरेशन है। इनकी दुनिया इसके पहले की पीढ़ियों से बिल्कुल अलग है। इन्हें 24x7 मोबाइल चाहिए, रील चैटबॉट और इंस्टेंट रिवाइंड्स भी चाहिए। इनके पास सूचना का अकूत भंडार है, लेकिन अपने अनुभवों की मुट्ठी भर पूंजी नहीं है। स्वतंत्रता, अभिव्यक्ति, पसंद का पहनावा और प्यार जैसी हर चीज पर इनका अधिकार है और इनको लगता है यह तो सब जन्मसिद्ध अधिकार है यानी, ये तो हर किसी को मिलते ही मिलते हैं। इनके दिमाग में कभी नहीं

पुस्तक चर्चा / सरस्वती रमेश

भारतीय स्वाधीनता आंदोलन के दौरान सिर्फ आंदोलनकारी ही जेल नहीं भेजे गए बल्कि आंदोलन के समर्थकों में पत्र-पत्रिकाएँ निकालने वाले अनेक संपादकों को भी जेल में डाल दिया गया था। साथ ही अनेक अखबार या उनके विशेष अंक प्रतिबंधित कर दिए गए थे। ऐसे ही प्रतिबंधित अंकों की खोजबीन कर इलाहाबाद विश्वविद्यालय में हिंदी विभाग के प्रोफेसर, संतोष भदौरिया ने उसे पुस्तक रूप दिया है, जिसका नाम है-अंग्रेजी राज और हिंदी की प्रतिबंधित पत्रकारिता।

किताब भारत में स्वाधीनता आंदोलन के विकास की चर्चा से शुरू हुई है, जिसमें लेखक ने इसके विभिन्न चरणों

होने लगी। आजादी के शुरुआती दौर में अज्ञेय जैसे कदावर लेखक ने भी एक निबंध में लिखा था, 'मिला सब कुछ: सब वेपेंदी का। शिक्षा मिली उसकी नींव, आत्म गौरव नहीं मिला, राष्ट्रीयता मिली, उसकी नींव, अपनी ऐतिहासिक पहचान नहीं मिली, यानी आजादी में जन्मे-पले मुझको-आजादी के आदि पुरुष को चेहरा मिला, व्यक्तिव नहीं मिला... और बिना व्यक्तिव के चेहरा क्या होता है? स्पष्ट है कि वह फकत चेहरा होता है। पहन लो, उतार लो, उस पर अलकतरा पोत दो चूना लगा दो... और यही सब तो हम कर रहे हैं... हर कोई कर रहा है।' (कवि मन, पृष्ठ 63)

हमारे समय के एक बड़े कवि का यह विशुद्ध कथन है आजादी और उसकी फलश्रुति को लेकर। क्यों बंटते गए दायरों में हम: यह सोचने की बात है कि जिस जन्मे से आजादी पाने के लिए हर नागरिक संघर्षरत था। सभी धर्म, संप्रदाय, जाति, वर्ण के लोग, यहां तक कि पूंजीपति भी देश की आजादी के लिए तन, मन, धन से लगे थे। सभी में राष्ट्रीय चेतना की अलग जग रही थी। भले आजादी के महासमर में गांधी, सुभाषचंद्र बोस, नेहरू और पटेल जैसे चंद बड़े नायक ही नजर आते हों पर आजादी की लौ जलाने में सभी का बराबर का हाथ रहा है। किंतु क्या हमने कभी सोचा कि इस आजादी का हमने क्या किया? हम मजहबी संकीर्ण दायरों में बंटते गए, हम वर्णों, जातियों, नस्लीय भेदभाव में बंटते गए, हम उत्तर-दक्षिण में बंटते गए। जिस आजादी के लिए सबका खून-पसीना बहा, उस आजादी की हम कीमत वसूलने में लग गए। भारत माता के लिए इससे बड़ी चिंता की बात क्या हो सकती है।

आजादी की लौ जलाने में सभी का बराबर का हाथ रहा है। किंतु क्या हमने कभी सोचा कि इस आजादी का हमने क्या किया? हम मजहबी संकीर्ण दायरों में बंटते गए, हम वर्णों, जातियों, नस्लीय भेदभाव में बंटते गए, हम उत्तर-दक्षिण में बंटते गए। जिस आजादी के लिए सबका खून-पसीना बहा, उस आजादी की हम कीमत वसूलने में लग गए। भारत माता के लिए इससे बड़ी चिंता की बात क्या हो सकती है।

आजादी की लौ जलाने में सभी का बराबर का हाथ रहा है। किंतु क्या हमने कभी सोचा कि इस आजादी का हमने क्या किया? हम मजहबी संकीर्ण दायरों में बंटते गए, हम वर्णों, जातियों, नस्लीय भेदभाव में बंटते गए, हम उत्तर-दक्षिण में बंटते गए। जिस आजादी के लिए सबका खून-पसीना बहा, उस आजादी की हम कीमत वसूलने में लग गए। भारत माता के लिए इससे बड़ी चिंता की बात क्या हो सकती है।

तब नई पीढ़ी भी समझेगी
स्वाधीनता की कीमत

देश की जो पीढ़ी पिछली सदी के अंत में या इक्कीसवीं सदी में जन्मी है, उसकी जीवनशैली कई मायने में विशिष्ट है। इसलिए उनको स्वाधीनता की कीमत समझाने के लिए कुछ अलग प्रयास करने होंगे।

आता कि संविधान प्रदत्त अधिकार हमें कितनी कुर्बानियां देकर मिले हैं? हमारी पूर्वज पीढ़ियों को इन्हें पाने के लिए कितनी यातनाएं सहनी पड़ी थीं? न जाने कितने लोग जेल गए, न जाने कितने लोग जेल में ही मर गए, हजारों लोगों ने फांसी का फंदा चूमा। आजादी के लिए अपने सारे सपनों को दांव पर लगा दिया, तब कहीं जाकर हमें यह आजादी मिली है। लेकिन डिजिटल जनरेशन को इस सबका प्रायः कोई एहसास नहीं होता है।

नए जमाने की जीवनशैली: हालांकि यह नई जनरेशन संवेदनशील नहीं है। जलवायु परिवर्तन के लिए, मानसिक स्वास्थ्य के लिए, लैंगिक समानता के लिए और जानवरों को लेकर संवेदनशीलता इस पीढ़ी में भी खूब है। मगर अपने जमाने के मुद्दों के लिए। नई पीढ़ी विरोध और विद्रोह करने से नहीं डरती बल्कि पिछली पीढ़ियों के मुकाबले कहीं ज्यादा व्यवस्थित

वर्तमान को लेकर जिस तरह की सोच वो रखते हैं, वैसी ही यह नई पीढ़ी भी रखे। सवाल है, आज की पीढ़ी क्यों अपनी पिछली पीढ़ियों की तरह आजादी को लेकर संवेदनशील नहीं है? पिछली पीढ़ी निभाए दायित्व: मध्य वय और बुजुर्ग वय से गुजर रही पीढ़ी को समझना होगा कि सिर्फ कुछ ऐतिहासिक घटनाओं की बात करने भर से नई पीढ़ी आजादी की लंबी लड़ाई

वैश्विक शक्ति बनने का सामर्थ्य: इतनी विपमताओं के बावजूद, 'कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी।' भारत विश्व की कूटनीति के समुच्च अडिग होकर खड़ा रह पाया है तो यह इसकी सफल विदेश नीति का ही परिचायक है। देखते-देखते देश तरक्की की पायदान पर अग्रसर है। देश तमाम क्षेत्रों में आत्मनिर्भर हुआ है, जहां सुई तक नहीं बनती थी, आज हम अनेक चीजें, शोधित तेल, खाद्यान्न, वस्त्रादि विदेशों को निर्यात कर रहे हैं। अमेरिकी प्रभुत्व में सिलिकॉन वैली के भारतीय तकनीकविदों की बड़ी भूमिका है। भारत आजादी के इन अठहत्तर

सालों में आज आर्थिक स्तर पर एक महाशक्ति बन चुका है। सैन्य शक्तों और अंतरिक्ष शोध के क्षेत्र में हम निरंतर नए क्षितिज को स्पर्श कर रहे हैं। यही नहीं सदियों पुरानी अपनी संस्कृति व ज्ञान परंपरा के नाते हम विश्वगुरु बनने का भी सामर्थ्य रखते हैं। यह ऋषियों, संतों, महात्माओं की तपोभूमि रही है, यह अपरिग्रह, सदाचार, अहिंसा और सर्वधर्मसमभाव का भूमि है। हमने पूरी विश्व-वसुधा को मानवात के नाते एक समझा है। हमने विश्व के कमजोर मुल्कों का हर मुसीबत में साथ दिया, हर स्तर पर विश्व शांति

की पहल और अपील की हैं। हमने विश्व स्तर पर रंगभेद का विरोध किया। इसीलिए विश्व में हमारी सबसे अलग प्रतिष्ठा है। सशक्त राष्ट्र निर्माण में निभाए

भूमिका: हालांकि अभी हमारे समुच्च चुनौतियां भी कम नहीं हुई हैं। चिंता इस बात की है कि दलीय संकीर्णताएं ज्यादा हावी हैं, जाति, मजहब विचारधारा और सामाजिक स्तर पर लोग बंटे-बंटे से नजर आते हैं। आज आजाद हुए 78 साल हो गए हैं पर हम न भूलें कि अब यह बाहर से दिखने वाली गुलामी का दौर नहीं, यह सूक्ष्म गुलामी का दौर है- हमारी भाषा, हमारी संस्कृति, हमारे सोच पर हमले इतने सूक्ष्म हैं कि उन्हें पहचानना मुश्किल है। ऐसे सूक्ष्म हमलों के प्रति हमें सावधान रहना है। सशक्त राष्ट्र निर्माण के लिए हमें आपस में बांटने वाली सोच और अलगाववादी ताकतों से सावधान रहना होगा। हमें एक ऐसे भारत का निर्माण करना है, जहां हर नागरिक स्वाभिमान का अनुभव कर सके और उसे यह लगे कि यह देश उसका है, उसके सुख-दुख का साथी और उसके हितों का पहरेदार है। तभी सही मायने में देश का हर नागरिक स्वयं को आजाद, समृद्ध और सुरक्षित महसूस करेगा। इसके लिए हम सभी को अपने-अपने स्तर पर भूमिका निभाने के लिए संकल्पित होना होगा। *

सदियों के संघर्ष के बाद आर्थिक रूप से कमजोर देश रहा भारत, आज अगर विश्व की आर्थिक महाशक्ति बना है तो इसके पीछे हमारा निरंतर संघर्ष और सही दिशा में किया गया प्रयास ही रहा है। कैसे हासिल की हमने यह उपलब्धि, उस पर एक नजर।

हर चुनौती को पार कर
हम बने आर्थिक महाशक्तिउपलब्धि
लोकनिर्णय गौतम

हाई शताब्दियों तक परतंत्र रहने के बाद जब 1947 में भारत आजाद हुआ, तो हमें राजनीतिक आजादी तो मिल गई, लेकिन आर्थिक आजादी अभी भी दूर का सपना था। इस राजनीतिक आजादी के लिए हमने विभाजन की जो विभीषिका झेली थी और ढाई शताब्दियों तक हमारा जिस तरह से औपनिवेशिक शोषण हुआ था, उस सबके कारण कृषि पर आधारित हमारी अर्थव्यवस्था बेहद पिछड़ी हुई थी और औद्योगिकीकरण का हमारे पास लगभग न के बराबर आधार था। ऐसे में आजादी के बाद भारत को अपनी आर्थिक दिशा खुद तय करनी थी। हर तरफ चुनौतियां मुंह बाए खड़ी थीं। लेकिन इन्हें चुनौतियों के बीच से हमने 78 सालों में अपनी जो आर्थिक यात्रा तय की है, वह महज आंकड़ों का खेल नहीं है। वह हमारे 78 वर्षों की अथक मेहनत, आत्मवलोकन और साहसिक निर्णयों का परिणाम है। फर्श से पहुंचे अर्श पर: हमारी आर्थिक उपलब्धि, किसी तरह की तुलना या इम्तहान के लिए नहीं है। हमने पिछले 78 सालों में जो उपलब्धियां हासिल की हैं, वो हमारे आत्मगौरव की जीती-जागती कहानियां हैं। साल 1947 में भारत का सकल घरेलू उत्पाद आज की कीमतों पर महज 2.7 लाख करोड़ रूपए था। जबकि 78 सालों बाद आज हम दुनिया की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था हैं और 2024-25 के आकलन के मुताबिक हमारा सकल घरेलू उत्पाद 33.2 लाख करोड़ रूपए है। इससे अंदाजा लगाया जा सकता है कि हमने 78 सालों में करीब 3100 फीसदी आर्थिक प्रगति की है। ये उपलब्धियां और ये आर्थिक विकास हमने पिछले 78 सालों में दिन-रात की मेहनत के बाद हासिल किया है।

कठिन संघर्ष: जब भारत से अंग्रेज गए थे, तो हमारा औद्योगिक उत्पादन नगण्य था। हमारा बुनियादी ढांचा पूरी तरह से ध्वस्त था, क्योंकि आजादी के लिए हमने 1857 से लेकर 1947 तक यानी 90 साल तक युद्ध लड़ा था। इस कारण अंग्रेज इस दौरान भारत के अधिक से अधिक संसाधन लूटकर इंग्लैंड ले गए थे और जब उनको ये मालूम पड़ा कि वह अब भारत में नहीं रह सकते, तो उन्होंने हमारे बुनियादी आर्थिक विकास पर विशेषकर औद्योगिक विकास पर बिल्कुल ध्यान नहीं दिया बल्कि अपने ढाई सौ सालों के कार्यकाल में उन्होंने जो आर्थिक ढांचा खड़ा किया था, उसे भारत से जाने के पहले बुरी तरह से ध्वस्त कर दिया था। जिस समय भारत अंग्रेजों की गुलामी से आजाद हुआ था, हम मूलतः कच्चा माल आपूर्ति करने वाले एक

विदेशी मुद्रा भंडार 650 अरब डॉलर से भी ज्यादा का है। 2024 में तो एक समय यह 724 अरब डॉलर की ऊंचाई को भी पार कर गया था। आज भारत आईटी, फार्मा, रक्षा, डिजिटल पेंमेंट, अंतरिक्ष और ग्रीन एनर्जी जैसे क्षेत्रों में महत्वपूर्ण आर्थिक ताकत है। दूर करनी होंगी कमजोरियां: हालांकि हमारी अर्थव्यवस्था की कुछ बड़ी कमजोरियां भी हैं, जो आज भी हमें प्रतिव्यक्ति आय के मामले में दुनिया के गरीब देशों की कतार का हिस्सा बनाती हैं। आज भी भारत में ग्रामीण क्षेत्रों में पर्याप्त रोजगार नहीं है, जिस कारण गांवों से शहरों की ओर तूफानी रफ्तार से पलायन हो रहा है। हमारे देश के असंगठित औद्योगिक क्षेत्रों की आज भी पहाड़ सरीखी चुनौतियां हैं और आज भी हमारे विदेशी मुद्रा भंडार का 50 फीसदी से ज्यादा हिस्सा कच्चे तेल के आयात पर खत्म होता है। बावजूद इसके भारत आज अपने आपमें एक आर्थिक शक्ति है। साल 2017 के बाद से अब तक हम दुनिया के सर्वाधिक तीव्र गति से विकास करने वाले देश हैं। *



उपनिवेश देश भर थे। इसलिए जरूरी था कि आजादी के बाद भारत का पूरी तरह से आर्थिक पुनर्निर्माण होता और ऐसा ही हुआ। निरंतर बढ़ते रहे आगे: साल 1950 से 1980 के दौरान भारत ने नियोजित अर्थव्यवस्था की जबदस्त कीमत चुकाई। क्योंकि योजनाबद्ध ढंग से विकास करने का एकमात्र यही रास्ता था। जिस कारण लंबे समय तक हमारी आर्थिक विकास दर 3 से 3.5 के बीच रही। लेकिन हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि इसी विकास दर के दौरान हम परमाणु ऊर्जा, अंतरिक्ष अनुसंधान, हरित क्रांति और देश में भारी उद्योगों का निरंतर जाल भी बिछाते रहे, जो हमारी अथक मेहनत और दूरदृष्टि का नतीजा था। लागू किए आर्थिक सुधार कार्यक्रम: 78 सालों के विकास क्रम को देखें तो 1991 के बाद वैश्विक

दबावों के बीच हमने आर्थिक सुधार कार्यक्रम लागू किए, विशेषकर 1991 में तब, जब हमारे पास सिर्फ 15 दिनों के आयात भर के लिए विदेशी मुद्रा शेष था। उस समय हमने आईएमएफ के पास अपना सोना गिरवी रखकर कर्ज लिया और आज स्थिति यह है कि हमारा

विदेशी मुद्रा भंडार 650 अरब डॉलर से भी ज्यादा का है। 2024 में तो एक समय यह 724 अरब डॉलर की ऊंचाई को भी पार कर गया था। आज भारत आईटी, फार्मा, रक्षा, डिजिटल पेंमेंट, अंतरिक्ष और ग्रीन एनर्जी जैसे क्षेत्रों में महत्वपूर्ण आर्थिक ताकत है। दूर करनी होंगी कमजोरियां: हालांकि हमारी अर्थव्यवस्था की कुछ बड़ी कमजोरियां भी हैं, जो आज भी हमें प्रतिव्यक्ति आय के मामले में दुनिया के गरीब देशों की कतार का हिस्सा बनाती हैं। आज भी भारत में ग्रामीण क्षेत्रों में पर्याप्त रोजगार नहीं है, जिस कारण गांवों से शहरों की ओर तूफानी रफ्तार से पलायन हो रहा है। हमारे देश के असंगठित औद्योगिक क्षेत्रों की आज भी पहाड़ सरीखी चुनौतियां हैं और आज भी हमारे विदेशी मुद्रा भंडार का 50 फीसदी से ज्यादा हिस्सा कच्चे तेल के आयात पर खत्म होता है। बावजूद इसके भारत आज अपने आपमें एक आर्थिक शक्ति है। साल 2017 के बाद से अब तक हम दुनिया के सर्वाधिक तीव्र गति से विकास करने वाले देश हैं। *

दोहे / प्रो. शरद नारायण खरे



शोभित, सुरभित, तेजमय, पावन अरु अभिराम।
राष्ट्र हमारा मान है, लिए उच्च आराम।।

राष्ट्र-वंदना में करूं, करता हूँ यशगान।
अनुभवैय, उत्कृष्ट है, भारत देश मगन।।

नदियां, पर्वत, खेत, वन, सागर अरु मैदान।
नैसर्गिक सौंदर्यमय, मेरा हिंदुस्तान।।

लिए एकता प्रति मधुर, गीता और कुरान।
दीवाली-होली सुखद, एक्यभाव-पहचान।।

सारे जग में शान है, मान रहा संसार।
राष्ट्र हमारा है प्रखर, फैलाता उजियार।।

मातृ-पिता, गुरु, नारियां, पातीं नित सम्मान।
संस्कार मम राष्ट्र की, है चोखी पहचान।।

तीन रंग के मान से, हैं हम सब अभिभूत।
राष्ट्रवंदना कर रहे, भारत कां के पृत।।

राष्ट्रप्रेम अस्तित्व में, आया नवल विगान।
कण-कण करने लग गया, भारत का यशगान।।

भारत की सीमाओं पर, जमे हुए हैं लाल।
शौर्य, वीरता देखकर, रोते सभी निहाल।।

आजादी की वंदना, करता सारा देश।
आश्रो, रम्य रच दें यहाँ, वासंती परिवेश।।

तब नई पीढ़ी भी समझेगी
स्वाधीनता की कीमत

देश की जो पीढ़ी पिछली सदी के अंत में या इक्कीसवीं सदी में जन्मी है, उसकी जीवनशैली कई मायने में विशिष्ट है। इसलिए उनको स्वाधीनता की कीमत समझाने के लिए कुछ अलग प्रयास करने होंगे।

आता कि संविधान प्रदत्त अधिकार हमें कितनी कुर्बानियां देकर मिले हैं? हमारी पूर्वज पीढ़ियों को इन्हें पाने के लिए कितनी यातनाएं सहनी पड़ी थीं? न जाने कितने लोग जेल गए, न जाने कितने लोग जेल में ही मर गए, हजारों लोगों ने फांसी का फंदा चूमा। आजादी के लिए अपने सारे सपनों को दांव पर लगा दिया, तब कहीं जाकर हमें यह आजादी मिली है। लेकिन डिजिटल जनरेशन को इस सबका प्रायः कोई एहसास नहीं होता है।

नए जमाने की जीवनशैली: हालांकि यह नई जनरेशन संवेदनशील नहीं है। जलवायु परिवर्तन के लिए, मानसिक स्वास्थ्य के लिए, लैंगिक समानता के लिए और जानवरों को लेकर संवेदनशीलता इस पीढ़ी में भी खूब है। मगर अपने जमाने के मुद्दों के लिए। नई पीढ़ी विरोध और विद्रोह करने से नहीं डरती बल्कि पिछली पीढ़ियों के मुकाबले कहीं ज्यादा व्यवस्थित

वर्तमान को लेकर जिस तरह की सोच वो रखते हैं, वैसी ही यह नई पीढ़ी भी रखे। सवाल है, आज की पीढ़ी क्यों अपनी पिछली पीढ़ियों की तरह आजादी को लेकर संवेदनशील नहीं है? पिछली पीढ़ी निभाए दायित्व: मध्य वय और बुजुर्ग वय से गुजर रही पीढ़ी को समझना होगा कि सिर्फ कुछ ऐतिहासिक घटनाओं की बात करने भर से नई पीढ़ी आजादी की लंबी लड़ाई

सुधारों और बदलावों की मांग करती है। लेकिन देखने वाली बात यह है कि इसका ज्यादातर विरोध ऑनलाइन होता है या कहीं यह ऑनलाइन विरोध के लिए खुद को ज्यादा फिट पाती है। वास्तविक धरातल पर इसे उतरना कम पसंद है। उनकी इस सोच के लिए नई पीढ़ी को नैतिकता का पाठ पढ़ाने वाली पुरानी पीढ़ी को भी कुछ बातें याद रखनी होंगी। पुरानी पीढ़ी के लोग सोचते हैं देश, दुनिया, इतिहास और

को लेकर अपने पूर्वजों की कुतज्ञ नहीं हो जाएंगी। हमें इस पीढ़ी को उन लाखों लोगों की सच्ची कहानियां भी बतानी होंगी, जो साधारण लोग थे और आजादी के लिए कुर्बान हो गए। हजारों किसान, लाखों मजदूर, आदिवासी, स्त्रियां, पत्रकार, आम दस्तकार और शिक्षक जैसे सैकड़ों विभिन्न क्षेत्रों के लोगों ने आजादी के लिए अपने आपको मिटा दिया। हमारी नई पीढ़ियां आजादी में सांस ले सकें, इसलिए पुरानी पीढ़ियों ने खुद को आजादी के संघर्ष की नींव में कैसे गला दिया। हमें नई पीढ़ी को बिना लाग-लपेट के, बिना किसी तरह के अतिवादी जिज्ञा के, इन आम लोगों के दुख दर्द को भी साझा करना होगा। हमें नई पीढ़ी को ये समझाना होगा कि लाखों जीवत उदाहरणों से कि हमें जो आजादी मिली है, वह तर्क-वितर्क से नहीं मिली, वह कुछ गिने चुने लोगों के प्रताप से नहीं मिली बल्कि लाखों लोगों की कुर्बानियों से मिली है। जब हम अपनी नई जनरेशन को आजादी की लड़ाई लड़ने वाली पीढ़ी का समूचा ब्योरा सौंपेंगे, तब कहीं जाकर इस पीढ़ी में इस सबके प्रति संवेदना उमड़ेगी। हमें नई पीढ़ी को

बताना होगा कि संविधान का उपहार हमें यू ही नहीं मिल गया। उनके सवालों का दें तार्किक जवाब: नई पीढ़ी अक्सर सवाल पूछती है कि स्वाधीनता सेनातियों ने ऐसा क्यों नहीं किया? वैसा क्यों नहीं किया? तो हमें इस पीढ़ी को बताना होगा कि यह पूरा मामला महज कुछ चाहने और कह देने भर का नहीं था। ये बेहद जटिल और बेहद दुरुह मसले थे, इतना आसान नहीं है यह कहना कि फलों ने यह क्यों नहीं किया? कई बार इतिहास की कुछ विरासतें हमारे निर्यात का हिस्सा होती हैं। विभाजन भी ऐसी ही निर्यात थी। पुरानी पीढ़ी को जरूरत है कि वह नई पीढ़ी के लिए सिर्फ उपदेशक न बने, बल्कि इस बात की गहराई से पड़ताल करे कि आखिर उसे आजादी के अथक संघर्ष को लेकर उतनी संवेदनशीलता क्यों नहीं है, जितनी होनी चाहिए? तब हम नई पीढ़ी को आजादी की कीमत समझाने में सफल हो सकेंगे। अगर आज की नई पीढ़ी अपने तरीके से आजादी की परिभाषा गढ़ना चाहती है, तो यह उसका हक है। लेकिन जिन्होंने आजादी की लड़ाई में खुद को कुर्बान करके हमारे लिए स्वतंत्रता अर्जित की है, उन्हें यू ही नहीं भूला जा सकता। पुरानी पीढ़ी की जिम्मेदारी है कि वह नई पीढ़ी को इसके महत्व और इसकी संवेदनशीलता को समझाए। यह पीढ़ी तेज है, त्वरित अंतज में निपण्य लेती है, इसलिए अगर इस पीढ़ी को यह बात सही तरीके से बता दी जाए कि हमें जो आजादी हासिल है, वह लाखों लोगों के बलिदान और देशभक्ति का नतीजा है, तो नई पीढ़ी को आजादी का पाठ पढ़ाना और उसके लिए पर्याप्त संवेदनशील बनाना इतना मुश्किल नहीं होगा। *



निश्चय मन में ठाना है। मातृभूमि की बलिबेदी पर निज बलिदान चढ़ाना है। प्रतिबंधित पत्र-पत्रिकाओं के छपने के तमाम अनुसूने किस्सों को पढ़कर यह पता चलता है कि किताब को लिखने के लिए लेखक ने शोध कार्य में कितना परिश्रम किया है। यह उनके परिश्रम का ही नतीजा है कि किताब ऐतिहासिक विषय पर आधारित होने के बावजूद कहीं भी बोझिल नहीं लगती है। यह पुस्तक उस दौर की प्रतिबंधित पत्रकारिता के क्रमिक इतिहास को सुगठित तरीके से प्रमाणित सूचनाओं के आधार पर प्रस्तुत करती है। *

किताब: अंग्रेजी राज और हिंदी की प्रतिबंधित पत्रकारिता, लेखक: संतोष भदौरिया, मूल्य: 350 रूपए, प्रकाशक: लोकभारती निपण्यवैवस, प्रयागराज

अंग्रेजी राज और
हिंदी की
प्रतिबंधित पत्रकारिता



द्वारकाधीश मंदिर द्वारका, गुजरात

भगवान श्रीकृष्ण की जन्मभूमि मथुरा और वृंदावन है तो उनकी कर्मभूमि द्वारका है। श्रीकृष्ण ने अपने बचपन की अठखेलियाँ और रास लीलाएं ब्रज में कीं, तो द्वारका उन्हें द्वारकाधीश यानी द्वारका के राजा के तौर पर जानता है। भगवान श्रीकृष्ण की कर्मभूमि द्वारका में जन्माष्टमी उत्सव बहुत ही भव्यता के साथ मनाया जाता है। इस दिन द्वारका के प्रसिद्ध द्वारकाधीश मंदिर को फूलों और दीयों से सजाया जाता है। इस दिन यहां के खास आकर्षणों में मंगला आरती और झूलन उत्सव प्रमुख हैं। जन्माष्टमी के दिन गुजरात में समुद्र के किनारे स्थित द्वारका नगरी में देश-विदेश के लाखों श्रद्धालु और पर्यटक यहां इस मंदिर के जन्माष्टमी उत्सव में शामिल होते हैं। *



उडुपी श्रीकृष्ण मठ, कर्नाटक

दक्षिण भारत में कृष्ण भक्तों की श्रद्धा का एक महत्वपूर्ण केंद्र उडुपी है। जन्माष्टमी के दिन कर्नाटक के उडुपी स्थित उडुपी श्रीकृष्ण मठ में विशेष पूजा, भजन और सांस्कृतिक कार्यक्रम होते हैं। मंदिर में कृष्ण लीला, नाटक, रथयात्रा और ध्वजारोहण जैसे कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। इस दौरान पूरे उडुपी शहर में रात्रि जागरण का माहौल होता है। हर तरफ लोम कृष्ण भक्ति में डूबे दिखते हैं। रात 12 बजे भगवान कृष्ण के जन्म के बाद यह उत्सव अपने चरम पर पहुंचता है और फिर दिनभर भजन कीर्तन में रमे रहने वाले भक्तजन प्रसाद खाकर अपना उपवास-त्रत तोड़ते हैं। द्वारका की तरह ही उडुपी में भी जन्माष्टमी पर देश-विदेश से श्रद्धालु और पर्यटक आते हैं। *

विशेष: जन्माष्टमी, 16 अगस्त

पर्वल्लास / धीरज बसाक

मगवान श्रीकृष्ण के जन्मोत्सव को समर्पित जन्माष्टमी का पर्व पूरे देश में असीम श्रद्धा और हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है। इस अवसर पर देश के कुछ प्रदेशों एवं प्रमुख कृष्ण मंदिरों में मनाए जाने वाले विशेष उत्सवों के बारे में यहां बता रहे हैं विस्तार से।

श्रद्धा-उल्लास से मनाया जाता है देश-विदेश में जन्माष्टमी पर्व



इंफाल की रास लीला, मणिपुर

देश का उत्तर-पूर्व भी कृष्ण भक्ति में डूबा रहने वाला भू-भाग है। विशेषकर मणिपुर में वैष्णो समुदाय, कृष्ण जन्माष्टमी को पारंपरिक रास लीला और विख्यात मणिपुरी नृत्य के विशिष्ट संयोजन के साथ मनाते हैं। इस दिन पूरे इंफाल में जगह-जगह रास लीलाओं का आयोजन होता है। कृष्ण जन्माष्टमी पर इंफाल में आयोजित होने वाली रास लीला पूरी दुनिया में विख्यात है। इस रास लीला में भगवान कृष्ण के जीवन के विभिन्न पहलुओं का अत्यंत भक्तिपूर्ण ढंग से मंचन होता है और यह मंचन विशेष मणिपुरी नृत्य पर आधारित होता है। *

मुंबई का दही हांडी उत्सव, महाराष्ट्र

मुंबई में कृष्ण जन्माष्टमी का उत्सव देश के दूसरे हिस्सों से बिल्कुल अलग जोश और उल्लास के साथ मनाया जाता है। इस दिन महाराष्ट्र के लगभग हर शहर में और उसमें भी विशेष तौर पर मुंबई में हर गली में एक ऊंचे स्थान पर दो पेड़ों या दो इमारतों के बीच बंधी रस्सी में बीचों-बीच जहां चारों तरफ खुला मैदान होता है, बहुत ऊंचे एक हांडी बांधी जाती है, जिसमें दही, मिठाईयां और रुपए भरे होते हैं। कृष्ण के बाल सखा माने जाने वाले गोविंदा मानव पिरामिड का आकार बनाकर हवा में हांडी तक पहुंचते हैं और फिर इसे तोड़ते हैं। मुंबई में जन्माष्टमी के दिन गोविंदाओं की टोलियां दही-हांडी उत्सव में घूम-घूमकर हिस्सा लेती हैं और जब एक टोली हांडी तक नहीं पहुंच पाती, तो दूसरी टोली को उसके लिए मौका दिया जाता है। हांडी फोड़ने वाले मित्रमंडल/टोलियों को उत्सव का आयोजन करनी सोसायटी या मुहल्ला पुरस्कृत करता है। *



कांडमांडू स्थित कृष्ण मंदिर में जन्माष्टमी उत्सव

विदेशों में जन्माष्टमी उत्सव की छटा

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी सिर्फ भारत में ही मनाया जाने वाला उत्सव नहीं है। यह एक वैश्विक उत्सव है। भारत के बाहर नेपाल, बांग्लादेश, फिजी, मॉरीशस, त्रिनिदाद, सूरीनाम आदि देशों में भी भव्य जन्माष्टमी उत्सव मनाए जाते हैं। नेपाल के पश्चिम गांव और कांडमांडू स्थित कृष्ण मंदिरों में इस दिन भक्तों की भीड़ उमड़ती है और नृत्य, भजन संध्या तथा झूलों की परंपरा से उत्सव मनाया जाता है। बांग्लादेश में ढाका स्थित जैसोर में जन्माष्टमी को भव्य पर्व के रूप में मनाया जाता है। इस दिन यहां शोभा यात्रा, भगवत गीता पाठ और सांस्कृतिक नाटकों का मंचन होता है। फिजी, मॉरीशस और सूरीनाम में प्रवासी भारतीय समुदाय के लोग कीर्तन मंडलियों के जरिए कृष्णलीला का मंचन और भजन गाते हैं। इसके अलावा लंदन (ब्रिटेन) के इस्कॉन मंदिर, अमेरिका के न्यूयॉर्क, ह्यूस्टन और लॉस एंजिल्स आदि के इस्कॉन मंदिरों में भी जन्माष्टमी में भव्य सांस्कृतिक उत्सव मनाए जाते हैं। इसके साथ ही यूरोप में रूस, यूक्रेन, हंगरी और जर्मनी के इस्कॉन मंदिरों में भी कृष्ण जन्माष्टमी बहुत भव्य तरीके से आयोजित की जाती है। *

अद्वैत कैरेक्टर युवाओं को अपनी तरफ चुंबक के माफिक खींचता है, तो दूसरी तरफ जन्माष्टमी का ग्लोबल आकर्षण यह दर्शाता है कि भारतीय संस्कृति सीमाओं में कैद नहीं है। यही वजह है कि आज न्यूयॉर्क से लेकर नैरोबी तक और लंदन से लेकर सिडनी तक कृष्ण भक्तों ने जन्माष्टमी को ग्लोबल फेस्टिवल बना दिया है। रासलीला, दही हांडी और कृष्ण जन्मोत्सव आज भारत की विदेशों में सांस्कृतिक पहचान है। सिर्फ पहचान ही नहीं, यह सांस्कृतिक कूटनीति का हिस्सा भी है। जन्माष्टमी के गीत, डांस, कॉस्ट्यूम ट्रेड और डिजिटल ज्ञाकियां अब डिजिटल आर्ट और क्रिएटिविटी का हिस्सा हैं। ये बदलाव साबित करते हैं कि कृष्ण ग्लोबल आकर्षण का विषय क्यों हैं? कृष्ण का विचार और कृष्ण का होना उस दौर में भी नया और आधुनिक था और इस दौर में भी नया और आधुनिक है। डिजिटल युग में कृष्ण की प्रासंगिकता पहले से ज्यादा बढ़ गई है। कृष्ण की युनिवर्सल अपील: श्रीकृष्ण केवल हिंदू धर्म के देवता भर नहीं हैं। वे एक फिलॉस्फर हैं, वे एक योद्धा हैं, वे एक प्रेमी हैं, वे एक रणनीतिकार हैं और वे एक मेंटर भी हैं। हर संस्कृति में वह किसी न किसी रूप में फिट बैठते हैं। यही कारण है कि वह हर संस्कृति में स्वीकार्य हैं। *

मगवान कृष्ण के प्रति भक्तिभाव रखने वालों के लिए तो वे पूज्य हैं ही। लेकिन उनके व्यक्तित्व में कई ऐसे गुण हैं, जो उन्हें आज के युवाओं के लिए भी आइकन बना देता है। इसीलिए देश-दुनिया के युवाओं में जन्माष्टमी की धूम दिखती है।

रील्स-मीम्स के दौर में युवाओं के ग्लोबल आइकन हैं श्रीकृष्ण



वेडियों को तोड़ना भी जानता है। हां, यह जरूर है कि आज का युवा अपने करियर की चिंता में रहता है। आज का युवा रिश्तों में उलझा है और जीवन के नए अर्थ तलाश रहा है। आज का युवा सिस्टम से सवाल करता है। ऐसे में श्रीकृष्ण उसका मार्गदर्शन करते हैं। कृष्ण का पूरा जीवन संघर्षों से भरा रहा। कष्ट और संकटों के बीच जन्म, बचपन में वध के अनेक प्रयास, युवावस्था में युद्ध, राजनीति, मित्रता और प्रेम के भ्रम, फिर भी इन सारी परेशानियों और संघर्षों के बीच कृष्ण मुस्कुराते रहते हैं, नाचते रहते हैं और बांसुरी बजाते रहते हैं। यह इनका उदात्त जीवन चरित्र है, जो दुनिया भर के, हर संस्कृति के युवाओं को अपनी ओर खींचता है। कृष्ण सीख देते हैं कि जियो और वह भी पूरी लय में, इसलिए वे युवाओं के चहेते बने हुए हैं। संस्कृति की सॉफ्टपावर: एक तरफ कृष्ण का

जन्माष्टमी की रात 12 बजे कंस की जेल में बंद बहन देवकी की कोख से एक दिव्य बालक श्रीकृष्ण जन्म लेते हैं, जो धर्म की पुनर्स्थापना का सूत्रधार बनते हैं। आमतौर पर मंदिरों में भजन संकीर्तनों तक सीमित रहने वाले श्रीकृष्ण, आज की डिजिटल दुनिया में भरपूर स्वीकृत हुए हैं, तो इसके कुछ कारण हैं। कृष्ण केवल भगवान नहीं, एक विचार हैं: आज का युवा सही मायने में वैश्विक नागरिक है। एक ऐसी दुनिया का नागरिक, जो अपनी पारंपरिक संस्कृति से अगढ़ जुड़ना जानता है, तो उसकी

नया दौर लोकप्रिय गीतम

आज का दौर तेजी से बदलते दृश्यों और पल भर की लोकप्रियता का दौर है। यही कारण है कि आज बड़े-बड़े त्योहारों और उत्सवों का रंग भी नई पीढ़ी के सिर चढ़कर आसानी से नहीं बोलता। लेकिन आश्चर्य की बात यह है कि इसी रील्स और मीम्स के दौर में जब सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म जैसे इंस्टाग्राम, यूट्यूब, फेसबुक और एक्स पर रील्स, मीम्स और वायरल ट्रेंड संस्कृति का नया चेहरा बन गए हैं, तब जन्माष्टमी दुनिया के लगभग 108 देशों में मनाई जा रही है। और हॉटटेस्टार जैसे टीवी चैनल जो कि पूरी तरह से खेलों और वेब सीरीज को समर्पित हैं, महीनों पहले से बार-बार विज्ञापन करते हैं कि जन्माष्टमी का कार्यक्रम सिधे प्रसारित किया जाएगा। अगर जन्माष्टमी जैसे पर्व के प्रति पूरी दुनिया में इस किस्म का आकर्षण उभर रहा है, तो इसका अर्थ केवल धार्मिक नहीं है बल्कि इसके पीछे सांस्कृतिक, मनोवैज्ञानिक और डिजिटल अनुकूलता का गहरा संबंध है। परंपरा का डिजिटलीकरण: हर साल भाद्रपद की अष्टमी को मनाया जाने वाला कृष्ण जन्म का पर्व जन्माष्टमी भारतीय संस्कृति में पारंपरिक रूप से मनाया जाता है। जैसा कि हम सब जानते हैं

बॉलीवुड ट्रेंड/ अशोक जोशी

पंद्रह अगस्त हो या छब्बिस जनवरी, राष्ट्रीय पर्व आते ही देशवासियों में देश प्रेम और देशभक्ति की भावनाएं हिलोरे लेने लगती हैं। देश प्रेम की यह भावना हिंदी फिल्मों में भी खूब उभर कर आई है। यह बात अलग है कि समय के साथ हिंदी फिल्मों में देश प्रेम को व्यक्त करने के तरीके बदलते रहे हैं।

ब्रिटिश काल में हिंदी फिल्मों

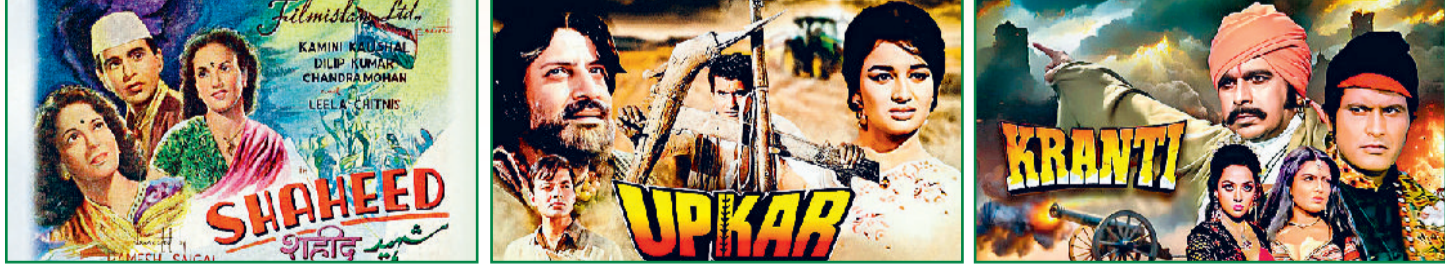
आजादी के पहले देशभक्ति पर आधारित तमाम फिल्मों में ब्रिटिश शासन को निशाने पर रखकर फिल्मकार देशभक्ति पर आधारित फिल्में बनाते थे। उस दौर में संसरणिय सख्त होने के कारण वे सिधे-सिधे तो अंग्रेजों पर हमला नहीं कर सकते थे, लेकिन परोक्ष या सांकेतिक रूप से ब्रिटिश शासन के खिलाफ हिंदी फिल्मों और उनके गीत स्वतंत्रता संग्राम का खूब समर्थन करते थे। इस संदर्भ में कवि प्रदीप का लिखा गीत 'दूर हटो ऐ दुनिया वालो हिंदुस्तान हमारा है' प्रासंगिक था, लेकिन ब्रिटिश अधिकारियों को इस गीत के बारे में बताया गया कि ब्रिटिश शासन का पक्ष लेकर विश्व युद्ध में उसके खिलाफ लड़ने वालों से कहा जा रहा है कि 'हिंदुस्तान हमारा' अर्थात् ब्रिटिश शासन का है।

शुरुआती दौर की फिल्मों में देशभक्ति

आजादी के बाद एक-दो दशक तक बनने वाली देशभक्तिपूर्ण फिल्मों में स्वतंत्रता संग्राम के किस्सों को ही ज्यादातर दिखाया जाता रहा। इन फिल्मों में दिलीप कुमार की 'शहीद' प्रमुख थी। उन दिनों

हिंदी फिल्मों के आरंभिक दौर से ही देशभक्ति पर आधारित फिल्मों बनती रही है। इन्हें एंटरटेनिंग बनाने के लिए काफी फिल्मी मसाले भी डाले जाते हैं। यही वजह है कि ऐसी फिल्मों को दर्शक भी खूब पसंद करते हैं। देशभक्ति पर आधारित कुछ चर्चित फिल्मों पर एक नजर।

हिंदी फिल्मों में देशभक्ति के रंग



शहीद भगत सिंह, चंद्रशेखर आजाद और झांसी की रानी जैसे महान चरित्रों को केंद्र में रखकर सेल्फूलाइड पर देश प्रेम के रंग भरे गए। 1962 के भारत-चीन युद्ध के विषय पर चेतन आनंद ने 'हकीकत' जैसी सार्थक फिल्म बनाई। देशभक्ति फिल्मों ने मनोज को बनाया भारत कुमार भगत सिंह के चरित्र पर आधारित फिल्म 'शहीद' की सफलता के बाद मनोज कुमार को जैसे फिल्म निर्माण की एक अलग दिशा मिल गई। इसके चलते ही मनोज कुमार ने 'उपकार', 'पूरब और पश्चिम', 'क्रांति', 'रोटी कपड़ा और मकान' जैसी कई फिल्में बनाईं, जो या तो देशभक्ति पर आधारित थीं या इन फिल्मों में कहीं न कहीं देश

प्रेम की भावना घुली-मिली थी। इन फिल्मों को दर्शकों का भी भरपूर प्यार मिला। अपनी देशभक्ति आधारित फिल्मों की वजह से ही मनोज कुमार बॉलीवुड में 'भारत कुमार' के रूप में मशहूर हो गए। बदल गया देशभक्ति फिल्मों का स्वरूप आगे चलकर, खासतौर से भारत-पाकिस्तान युद्ध के बाद देशभक्ति की फिल्मों का एक महत्वपूर्ण विषय भारत और पाकिस्तान का युद्ध और आतंकवाद बन गया। जे.पी. दत्ता ने भारत और पाकिस्तान युद्ध पर आधारित फिल्म 'बॉर्डर' का निर्माण किया। इस मल्टी स्टारर फिल्म को दर्शकों का खूब प्यार मिला। 'बॉर्डर' को कुछ हद तक 'हकीकत' की शैली में बनाने का प्रयास किया गया। इस फिल्म के गीत भी खूब लोकप्रिय हुए थे। जावेद अख्तर द्वारा लिखा गया फिल्म का गीत 'संदेश आते हैं' उन दिनों खूब लोकप्रिय हुआ था। यह

गीत 15 अगस्त, 26 जनवरी जैसे अवसरों पर आज भी बजाया जाता है। निर्माता-निर्देशक अनिल शर्मा की सनी देओल और अमीषा पटेल को लेकर बनाई गई फिल्म 'गदर : एक प्रेम कथा' में भी भारत-पाकिस्तान एंगल था। 'हिंदुस्तान जिंदाबाद था, हिंदुस्तान जिंदाबाद है और हिंदुस्तान जिंदाबाद रहेगा' जैसे देशभक्ति से भरे डायलॉग्स ने फिल्म की सफलता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उसके बाद आई आमिर खान की 'सरफरोश' में भी देशभक्ति का यही रंग था। इसमें आतंकी नेटवर्क के तार पाकिस्तान से जोड़कर दिखाया गया था। इस फिल्म को भी अच्छी सफलता हासिल हुई थी। हालांकि 'बॉर्डर' के बाद न तो जेपी



दत्ता सफल हो पाए और न ही अनिल शर्मा बॉक्स ऑफिस पर गदर मचा सके। देशभक्ति पर आधारित उनकी 'रिफ्यूजी' और 'वीर' बॉक्स ऑफिस पर बुढ़ी तरह प्रतीप रहीं। हालांकि अनिल शर्मा की 'गदर 2' ने अच्छी सफलता हासिल की। देशभक्ति फिल्मों का नया ट्रेंड पिछले कुछ वर्षों से अक्षय कुमार को भारत कुमार की पदवी मिली हुई है। उनकी कई फिल्मों में देशभक्ति की भावना खूब नजर आती है। पाकिस्तान को कोसने, उसकी नापाक हरकतों और उसके आतंकी मंसूबों को भी अक्षय कुमार की कुछ फिल्मों में दिखाया गया है। 'केसरी', 'बेबी', 'एयरलिफ्ट', 'हॉलिडे' और 'रुस्तम' जैसी अक्षय कुमार कई फिल्मों में देशभक्ति के अलग-अलग रंग दिखे। हाल में आई 'केसरी 2' से वह एक बार फिर देश प्रेम की भावना दर्शकों तक पहुंचाने में सफल रहे हैं।

भारतीय युवाओं में क्रिकेट से लेकर राजनीति हर क्षेत्र में पाकिस्तान से आगे रहने और उसे पराजित करने की भावना को उभारने में भी फिल्मकारों को महारथ हासिल है। इसीलिए ऐसी फिल्मों भी खूब बनती हैं। *

कहानी आशा शर्मा

स्वतंत्रता दिवस का यह मतलब कतई नहीं होता कि इस दिन को हम मौज-मस्ती करके बिता दें। राष्ट्रीय ध्वज फहरा कर देशप्रेम से ओत-प्रोत ना हों। स्वतंत्रता सेनानियों के बलिदान को याद ना करें। राष्ट्रीय पर्व के महत्व पर केंद्रित कहानी।

आजाद वीकेंड



इस बार लंबा वीकेंड आ रहा है, क्यों न ऋषिकेश चलें? सुना है वहां की कैप लाइफ बहुत शानदार होती है। खाना-पीना और नदी किनारे मस्ती... क्या कहते हो? बिजी कॉर्पोरेट लाइफ से उकताई राजी को वास्तव में एक ब्रेक की जरूरत महसूस हो रही थी। 'लंबा वीकेंड? कब है यह सुनहरा अवसर?' साथी श्यामली ने चहकते हुए पूछा तो राजी ने टेबल पर रखी कैलेंडर उसके सामने कर दिया। शुक्रवार को स्वतंत्रता दिवस का अवकाश और उसके बाद शनिवार और रविवार... देखते ही श्यामली भी तुरंत तैयार हो गई। समीर और अयान तो जैसे अवसर की तलाश में ही थे। सबने शुक्रवार की सुबह ऋषिकेश जाने का कार्यक्रम बना लिया। 'लेकिन उस दिन तो ऑफिस में भी झंडारोहण होगा ना, उसे छोड़कर कैसे जा सकते हैं?' अयान ने प्रश्न उठाया। 'क्या यह अयान...! एक तुम्हारे नहीं होने से क्या वहां का सारा प्रोग्राम कैसल हो जाएगा? चिल करो यार। आजादी का जश्न मनाने ही तो जा रहे हैं हम लोग।' राजी ने बेपरवाही से कहा और उसके बाद सभी प्रश्न समाप्त हो गए। शुक्रवार यानी स्वतंत्रता दिवस की सुबह छह बजे चारों दोस्त कार से रवाना हुए। समीर गाड़ी चला रहा था, अयान उसकी बगल में बैठा था। राजी और श्यामली पीछे की सीट पर पालथी मारकर बैठे थे। सुबह की ठंडी हवा से अठखेलियां करते चारों बड़े जा रहे थे। रास्ते में आने वाले गांवों में स्कूल जाते हाथों में तिरंगा लिए बच्चे सम्मोहित कर रहे थे। जगह-जगह स्कूल और अन्य प्रतिष्ठानों में देशभक्ति के गीत गुंज रहे थे। जोशीले गाने सुनकर श्यामली के रोम खड़े हो गए। शरीर में सिहरन सी दौड़ गई। 'क्या सचमुच लोग आजादी के लिए इतने दीवाने हो गए थे कि उन्हें मरने तक से डर नहीं लगा? हमें देखो! जरा सा भी दर्द बर्दाश्त नहीं होता।' श्यामली ने अचानक कहा तो सब उसे आश्चर्य से देखने लगे। 'जल्द हुए ही होंगे, आजादी क्या प्लेट में परोसी हुई मिली थी। मेरे दादा जी बताते थे कि उनके पिताजी स्वतंत्रता सेनानी थे। नेताजी का आजाद हिंद फौज के सिपाही। आज भी उनकी तस्वीर हमारे घर में रखी है।' अयान ने गर्व से बताया और गर्दन घुमाकर बारी-बारी से सबकी तरफ देखा। उसे बाकी दोस्तों की आंखों में अपने लिए अतिरिक्त सम्मान दिखाई दिया। सबके मुंह आश्चर्य से टेढ़े हुए सो अलग। तभी अचानक समीर ने जोरदार ब्रेक लगाया। पीछे की सीट पर बैठी राजी और श्यामली का सिर आगे की सीट से टकरा गया। 'यह क्या पागलपन है समीर? ऐसे कैसे गाड़ी चला रहे हो? मरवाओगे क्या?' सब एक साथ चिल्लाए। 'नो अचानक सामने से वह

लंगड़ा व्यक्ति आ गया था। अभी तो मर ही जाता!' कहते हुए झल्लाए समीर ने गाड़ी रोकी और लपक कर नीचे उतरा। देखा तो वह लंगड़ा व्यक्ति अभी भी उसी तरह सड़क के बीचों-बीच खड़ा था। 'मरोगे क्या? इस तरह कौन बीच सड़क पर खड़ा हो जाता है।' समीर उस भिखारी जैसे दिखने वाले बूढ़े दिव्यांग व्यक्ति पर चिल्लाया। वह व्यक्ति अपनी बैसाखी बगल में दबाए चुपचाप सावधान की मुद्रा में खड़ा रहा। अब तक बाकी तीनों भी वहां आ चुके थे। उन्हें भी यह देखकर हैरानी हुई कि उस व्यक्ति के चेहरे पर अभी-अभी घटित होने वाले एक्सीडेंट के बारे में सोचकर किसी भी प्रकार की घबराहट के निशान दिखाई नहीं दे रहे हैं। तभी उस व्यक्ति ने अपनी पोजीशन बदली और बैसाखी को ठीक से अपनी बांह के नीचे दबा लिया। 'सामने उस स्कूल में राष्ट्रगान की धुन बज रही थी ना, इसलिए मैं खड़ा हो गया। माफ करना लेकिन मैं अपने राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान के प्रति अपनी भावनाओं और उसके सम्मान को नम्रअंदाज नहीं कर सका। आप लोगों को तो शायद पता भी नहीं होगा कि राष्ट्रगान के समय ध्वज के सम्मान में सावधान खड़ा होना चाहिए।' व्यक्ति ने कहा तो सबकी निगाहें झुक गईं। सच जानकर समीर को अपने व्यवहार पर बहुत दुःख हुआ। वह हाथ पकड़ कर उस व्यक्ति को सड़क पार करवाने लगा। तभी उस व्यक्ति ने अपनी बैसाखी हटाई और लकड़ी के सहारे अपने पांवों से चलने लगा। सब एक-दूसरे को आश्चर्य से देखने लगे। बूढ़े व्यक्ति का यह आचरण किसी भी समझ में नहीं आया, किंतु वह व्यक्ति उनकी दुविधा समझ गया था। 'मैं भला आजादी की कीमत कैसे भूल सकता हूँ। मेरे पिताजी ने आजादी की लड़ाई में भाग लिया था और अंग्रेजों की गोली लगने से वे अपना एक पांव गंवा बैठे थे। उन्हीं को याद करते हुए मैं आज के दिन बैसाखी के सहारे चलता हूँ ताकि उनकी कुर्बानी भूल नहीं जाऊँ। आज की पीढ़ी को भले ही यह मजाक लगता होगा, लेकिन हमारी पीढ़ी के लिए यह दिन कितना महत्व रखता है, यह मैं बता नहीं सकता।' कहते हुए वह व्यक्ति भावुक हो गया। अब तक सब उसका हाथ धामे सड़क के दूसरी तरफ भी आ गए थे। सबकी निगाहें झुकी हुई थीं। 'युद्ध लगता है हमें आपस जाना चाहिए। क्यों न आज के दिन हम कोई देशभक्ति की भावना वाली फिल्म देखें?' राजी ने नया प्रस्ताव रखा तो सब एक बार फिर से हैरान हो गए लेकिन तुरंत संभल भी गए। 'ठीक कहते हो लेकिन उससे पहले ऑफिस जाकर तिरंगे को सलामी देंगे।' अयान ने आगे जोड़ा जो सब एकमत हो गए और अब गाड़ी ऋषिकेश जाने की बजाय ऑफिस की तरफ दौड़ रही थी। *